रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-10, कुल पृष्ठ-36, आषाढ़-श्रावण, विक्रम सम्वत् 2080, जुलाई, 2023

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट

बालक बालिका बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर

शिविर में भाग ले रहे बच्चे

शिविर के दौरान खेल कूद

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के लिए समर कैंप बहुत कुछ सीखने का मौका होता है। दिल्ली सेवा भारती (दक्षिणी विभाग) में बालक बालिका बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर का आयोजन 16 से 18 जून 2023 को जी एल टी सरस्वती विद्या मन्दिर में संपन्न हुआ। शिविर के माध्यम से बाल संस्कार केंद्रों व विभिन्न 45 सेवा बस्तियों के लगभग 142 बच्चों को खेल ही खेल में भारत की संस्कृति और राष्ट्रवाद के भाव से जोड़ दिया।

पहला दिन : शिविर का शुभारंभ शिविर की व्यवस्थाओं की सूचना के बाद गायत्री मंत्र और दीप प्रज्ज्वलन के साथ विभाग के माननीय अध्यक्ष श्री अनंगपाल जी के द्वारा किया गया। श्री अनंगपाल जी ने अपने उदबोधन में सत्र में शिविर का महत्व विषय पर अपनी बात रखी। इस सामूहिक सत्र के बाद जलपान हुआ और फ़िर एक घन्टे का खेल सत्र रहा। खेल का सत्र समाप्त होने के कुछ अन्तराल के बाद शिविर का दूसरा सत्र चर्चा का रहा। चर्चा का विषय था मेरी दिनचर्या, जिसमें बालक और बालिकाओं के साथ मेरी दिनचर्या कैसी हो विषय पर चर्चा की गई। साथ में उनकी दिनचर्या बनाने में सहयोग कर उसको अपने जीवन में लागू करने का आग्रह किया गया। गट व्यवस्था में पहले दिन चार गट बने दो बालकों के और दो बालिकाओं के गट, लेकिन शिविर में अपेक्षा से अधिक संख्या होने की वजह से अगले दिन के लिए पांच गट बना दिये गये। रात्रि भोजन के बाद रात्रि कार्यक्रम और फ़िर दीप विसर्जन के साथ पहला दिन समाप्त हुआ।

दूसरा दिन : अगले दिन प्रात: जागरण हुआ, खेल के साथ पूरे दिन की दिनचर्या में दो सामूहिक सत्र के साथ दो गटचर्चा सत्र रहे। सुबह के सामूहिक सत्र में वरिश कार्यकर्ता श्री खजान सिंह जी के द्वारा तय विषय आदर्श हिन्दू परिवार लिया गया। उन्होंने बहुत सहज और सरल तरीके से बताया कि एक आदर्श हिन्दू परिवार को सयुक्त परिवार होना चाहिये, घर में मन्दिर होना चाहिये, रोज पूजा होनी चाहिये, घर में धर्म ग्रंथ होना चाहिये, तुलसी का पौधा होना चाहिये, साक्षात गऊ माता न हो तो गऊ माता की फोटो होना चाहिये, जैसे बिदुओं के साथ विषय को समझाया। ऐसे ही सायं में दूसरे सामूहिक सत्र में विभाग कार्यवाह श्री रवि चौपड़ा जी ने संघ परिचय विषय लिया। उन्होंने कहानी के माध्यम से संघ का परिचय दिया। उन्होंने रंग बिरंगी बूंदी और बूंदी के लड्डू का उदाहरण देते हुये बताया कि जैसे सभी प्रकार की बूंदी को चीनी की चाशनी से मिला कर लड्डू बना दिया जाता है, उसी प्रकार सभी समाज को एक करने का कार्य संघ नामक चाशनी द्वारा किया जाता है। उन्होंने बताया कि डॉक्टर हेडगेवार जी ने बच्चों के साथ शुरु की गई शाखा ने कैसे आज विकराल रुप धारण कर लिया है और 1925 में शुरु होने वाला संघ 2025 में अपने 100 साल पूरे करने जा रहा। दिन में दो सत्र गट चर्चा के भी रहे जो उम्र और कक्षा अनुसार थे। पहले चर्चा सत्र का विषय रहा मेरी दिनचर्या, जिसमें बच्चों की दिनचर्या कैसी हो और उसका महत्व समझाया गया और उनकी दिनचर्या बनवाई गई। दूसरे गट चर्चा का विषय में बालिकाओं के लिए किशोरी विकास के विषय रहे और और बालकों के लिए स्वच्छता और अनुशासन विषय लिया गया। दिन में गट अनुसार चित्रकला प्रतियोगिता भी हुई। स्नान, भोजन और विश्रांति के साथ शाम को बच्चों के लिए बौद्धिक प्रश्नोतरी का भी सत्र रहा। रात्रि स्वादिस्ट भोजन के बाद रात्रि कार्यक्रम बाल सभा का आनंद भी बालक बालिकाओं द्वारा लिया गया। आइस्क्रीम के साथ रात्रि में दीप विसर्जन हुआ।

अन्तिम दिन : दूसरे दिन की तरह सुबह पांच बजे जागरण हुआ। खेलों के सत्र के बाद जलेबी,पोहा और चाय का गर्मा गरम अल्पाहार दिया गया जिसे बालक बालिकाओं ने खूब पसंद किया। अल्पाहार के बाद अन्तिम दिन भी दिनभर में दो सामूहिक सत्र

(शेष पृष्ठ 10 पर)

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-10, कुल पृष्ठ-36, जुलाई, 2023

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		4
स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट (संक्षिप्त परिचय)	आचार्य मायाराम पतंग	6
बन्दा बैरागी की अद्भुत वीरता	शुकदेव	11
अद्भुत, अकल्पनीय, अविश्वसनीय किन्तु सत्य	प्रतिनिधि	12
व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा)	कु. संस्कृति	13
गुरु से ज्ञान, ज्ञान से मोक्ष	इन्दिरा मोहन	14
जीवन कलश से छलकती बूंद	डॉ. (श्रीमती) संतोष माटा	17
जानिए गायत्री माता और गायत्री मंत्र को	प्रतिनिधि	19
'उत्कर्ष' के उत्कृष्ट कार्य	डॉ. संगीता त्यागी	20
वैष्णो देवी मंदिर का इतिहास और कथा	प्रतिनिधि	21
इंदौर में मातृछाया कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग	प्रतिनिधि	23
देश कभी नहीं भूल सकता डॉ. मुखर्जी को	संस्कृति	25
हमारी नई संसद	गंगा प्रसाद 'सुमन'	26
तिलक ऐसे बने लोकमान्य	धनंजय धीरज	27
पाप और पुण्य		28
नशा मुक्ति का संकल्प	संगीता गुप्ता	29
हँस लो भाई		32
सावन की महिमा	विनीता अग्निहोत्री	33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

समय की आवश्यकता : समान नागरिक संहिता

इस समय देश में समान नागरिक संहिता की चर्चा चल रही है। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल में भाजपा के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अलग-अलग कानूनों से देश कैसे चल सकता है! इसके बाद तो समान नागरिक संहिता का विरोध करने वाले राजनीतिज्ञ और मजहबी नेता खुलकर मुसलमानों को भड़काने में लगे हैं। इनका कहना है कि समान नागरिक संहिता मुसलमान विरोधी है, जबकि यह सभी समाज के लिए उपयोगी और भारत को एकजुट करने वाली है। इसलिए इसकी आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही है। यही कारण है कि भारत सरकार विधि आयोग के माध्यम से भी इस संहिता के लिए लोगों से उनकी राय मांग रही है। इससे पहले 2022 के उत्तराखंड विधानसभा चुनाव के समय वहां की भाजपा सरकार ने लोगों से वादा किया था कि यदि वह सत्ता में लौटती है तो समान नागरिक संहिता बनाएगी। यही कारण है कि सत्ता में लौटते ही राज्य सरकार ने समान नागरिक संहिता की रूपरेखा बनाने के लिए एक आयोग का गठन किया। अब उस आयोग ने अपना काम पूरा कर लिया है। वहां के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा भी है कि जल्दी ही राज्य में समान नागरिक संहिता लागू हो जाएगी। इससे पहले उत्तर प्रदेश, असम और गुजरात ने भी समान नागरिक संहिता बनाने की घोषणा की है। वहीं, गोवा में बरसों से समान नागरिक संहिता लागू है।

वास्तव में बरसों से भाजपा अपने कार्यकर्ताओं और समर्थकों से कह रही है कि वह देश में समान नागरिक संहिता लागू करेगी, जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाएगी और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर बनवाएगी। 2019 में अनुच्छेद 370 हट चुका है और इन दिनों श्रीराम मंदिर बन रहा है। यानी केवल समान नागरिक संहिता बची है। लोगों से किए गए इस वायदे को पूरा करने के लिए ही केंद्र सरकार इस दिशा में कार्य कर रही है।

भाजपा का यह वायदा न तो मुसलमान विरोधी है और न ही संविधान विरोधी। इसलिए जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, उन्हें संविधान अवश्य पढ़ना चाहिए। समान नागरिक संहिता का प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 44 में है। इसके अनुसार यह कानून देश के सभी नागरिकों पर लागू होगा, भले ही वह किसी भी मजहब, पंथ, लिंग या जाति का हो। विवाह से लेकर तलाक, संपत्ति के बंटवारे, बच्चा गोद लेने जैसे मामलों में सभी नागरिकों के लिए कानून एक होगा। बता दें कि अभी हिंदू और मुसलमान के लिए विवाह के कानून अलग-अलग हैं। कोई हिंदू एक विवाह कर सकता है, जबकि कोई मुसलमान चार निकाह करता है। यदि कोई हिंदू अपनी पत्नी को तलाक दिए बिना दूसरा विवाह करता है, तो वह अपराध है, वहीं कोई मुसलमान तलाक दिए बिना चार निकाह कर सकता है। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के अनुसार हिंदू महिलाओं को अपने माता-पिता से संपत्ति प्राप्त करने का अधिकार पुरुषों के समान है। विवाहित और अविवाहित बेटियों के अधिकार भी समान हैं। किसी हिंदू लड़की का विवाह 18 वर्ष से पहले करना दंडनीय अपराध है, जबकि मुसलमान अपनी लड़कियों का निकाह 15 वर्ष में ही कर सकते हैं।

एक देश में दो तरह के कानून चलने से अनेक तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय ने भी एक नहीं, दो-दो बार कहा है कि समान नागरिक संहिता बननी चाहिए। 1985 में शाहबानो मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था, ''संसद को एक समान नागरिक संहिता की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, क्योंकि यह एक ऐसा साधन है, जो राष्ट्रीय सद्भाव और काननू के समक्ष समानता की सुविधा देता है।'' अक्तूबर, 2015 में भी सर्वोच्च न्यायालय ने कहा, ''विभिन्न समुदायों के लिए अलग-अलग कानून स्वीकार नहीं किया जा सकता है।'' यानी सर्वोच्च न्यायालय भी समान नागरिक संहिता के पक्ष में है। इसके बावजूद कुछ नेता अपने वोट बैंक के लिए इस कानून के विरुद्ध लोगों के अंदर गलत धारणाएं फैला रहे हैं। इसलिए समाज को ऐसे नेताओं से सावधान रहना चाहिए। ❐

पाथेय

अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्य अस्य न कश्चइत्कर्तुमर्हसि।।

(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय, 2/17)

सरलार्थ : भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं कि तू इस तत्वज्ञान को जान ले कि आत्मा अविनाशी है। इस आत्मा का नाश ना तो कोई कर सकता है और ना ही कभी हो सकता है। यह सत्य जानने पर कभी शोक नहीं होगा।

शाश्वत धर्म

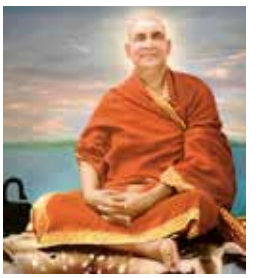

संस्कृति का तात्पर्य ही है मनुष्य को श्रेष्ठतम मानवीय सद्गुणों से समलंकृत करना। सबको संवारकर सामाजिक कल्याण के लिए प्रस्तुत करना। सभी लोग सुसंस्कृत हो जाएंगे तो समाज का सर्वांगीण विकास होगा। उस समाज में सभी प्राणी सुख शांति से रह सकेंगे। इसके प्रतिकूल परिस्थिति होने पर समाज में अनाचार तथा अराजकता पनपेगी। उस अवस्था में किसी को सुख-शान्ति नहीं मिलेगी। अतः अपने अतीत से प्रेरणा ले कर हमें सुसंस्कृत समाज के निर्माण में तन मन धन से जुट जाना चाहिए।

– पूज्य स्वामी शिवानंद जी महाराज

जुलाई 2023 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
3.7.2023	मंगलवार	गुरुपूजन
4.7.2023	मंगलवार	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
5.7.2023	बुधवार	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
6.7.2023	गुरुवार	डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जन्म
7.7.2023	शुक्रवार	नागपंचमी
11.7.2023	मंगलवार	विश्व जनसंख्या दिवस
15.7.2023	शनिवार	शिवरात्रि कांवड़ जलाभिषेक
17.7.2023	सोमवार	सोमवती अमावस्या
18.7.2023	मंगलवार	पुरुषोत्तम मास प्रारंभ
21.7.2023	शुक्रवार	गणेश चौथ
23.7.2023	रविवार	लोकमान्य तिलक जयन्ती
29.7.2023	शनिवार	कमला एकादशी, मोहर्रम
29.6.2023	गुरुवार	देवशयनी एकादशी तथा ईद उल जुहा

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट (संक्षिप्त परिचय)

■ आचार्य मायाराम पतंग

'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' नाम सुनते ही लगता है कि यह किसी सरकारी संस्था की परियोजना है। सेवा भारती ने अन्य किसी प्रकल्प का नाम ऐसा नहीं रखा। सचमुच इसका श्रीगणेश एक सरकारी योजना के रूप में ही हुआ था। उन दिनों दिल्ली सरकार ने 'स्लम बस्तियों' तथा 'पुनर्वास बस्तियों' के बालकों के लिए 'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' का विज्ञापन दिया। यमुना पार के एक सेवानिवृत्त कर्मचारी श्री जयसिंह पाल सेवा भारती से जुड़े थे, उन्हें यह प्रोजेक्ट मिला। मैं शाहदरा जिला सेवा भारती का मंत्री था। श्री जयसिंह पाल ने मुझसे संपर्क किया। योजना को कार्यान्वित करने के लिए उचित स्थान की खोज हम करने लगे। कई बस्तियों में गए। कार्य योग्य बस्ती की तलाश भी करनी थी तथा योजना के संचालन के लिए उचित भवन भी खोजना था।

मानसरोवर पार्क में एक संघ के निष्ठावान कार्यकर्ता थे श्री सत्यप्रकाश कोचर जी। कोचर जी हम दोनों को साथ लेकर दिलशाद गार्डन गए। वहां हमें मिला तीन झुग्गी बस्तियों का समूह कलन्दर कालोनी, दिलशाद विहार तथा दीपक कालोनी। एक स्थान पर तीनों मिल रही थी। वहां पेड़ के नीचे एक सज्जन चार बच्चों को पढ़ा रहे थे। वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि वह बेरोजगार हैं। इन बच्चों को थोड़ा-सा शुल्क लेकर पढ़ाते हैं और काम ढूंढ रहे हैं। हमने उन्हें सारी योजना बताई। उन्हें बताया कि आपको मानधन (Honorarium) सेवा भारती देगी। आपको पढ़ाना तो है, शुल्क नहीं लेना है। उनका नाम था श्री विश्वनाथ जी। डीडीए की ओर से भवन पास ही बन रहा था। परियोजना हेतु संबंधित अधिकारियों से मिलकर उसे स्वीकृत करा लिया गया। इसका किराया मात्र एक रुपया तय हुआ।

केन्द्र में चौक बनाने की विधि सीखते बच्चे

फिर कार्यकर्ताओं ने तीनों बस्तियों में सर्वेक्षण कया। कलन्दर कालोनी में ऐसे परिवार रहते थे जिनका व्यवसाय अन्य बस्तियों में जाकर बन्दर नचाना या जादू दिखाना था। जब हमने उनके बच्चों को पढ़ाने की चर्चा की तो कुछ परिवारों ने यहां तक कहा कि रोजी-रोटी छोड़कर अपने बच्चों को तुम्हारे पास पढ़ने भेजेंगे तो बन्दर क्या तुम्हारा बाप नचाएगा? हम क्या भूखे मरेंगे?

फिर भी सात बच्चों से कार्य शुरू करने में सेवा भारती सफल हुई। बालवाड़ी, बाल संस्कार, बालिका संस्कार एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किए गए। धीरे-धीरे सम्पर्क बढ़ा। बस्ती की ही एक प्रौढ़ महिला मीरा को बस्ती प्रमुख का दायित्व दिया गया। साथ ही उन बच्चों को गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना, प्रातः स्मरण, राष्ट्रीय गीत एवं कविताएं भी याद कराई गईं। प्रतिदिन प्रार्थना के समय अभ्यास कराया गया। शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण भी कराया गया।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन अर्थात जो बच्चे किसी पाठशाला में नहीं जाते। गलियों में खेलते हुए अपना समय नष्ट करते हैं। कूड़ा बीनना और चोरी, झपटमारी करना सीखते हैं तथा बुरे व्यसनों में फंसकर समाज को हानि पहुंचाते हैं। उनको मात्र अक्षर ज्ञान कराने से उदेश्य पूरा नहीं होता। उन्हें कुछ कमाने के साधन भी सिखाने होते हैं, ताकि वे स्वावलम्बी जीवन जी सकें।

दिलशाद गार्डन का यह केन्द्र सन् 1994 से निरन्तर

केन्द्र में कंप्यूटर प्रशिक्षण लेते युवा

कार्य कर रहा है। श्री जगदीश मेहता जी के निवास स्थान बदल जाने के पश्चात् इस महान परियोजना का कार्य माननीय मदन लाल खन्ना जी ने संभाला। खन्ना जी एक कुशल प्रबन्धक, संस्कारित एवं ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के कार्य प्रारंभ कर के इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया।

सरकार बदलने के बाद सरकारी अनुदान मिलना बन्द हो गया। छात्र-छात्राओं को अल्पाहार देना भी बन्द हो गया तो कठिनाई आ गई। सेवा भारती की इस विशिष्ट योजना को बन्द नहीं किया गया, अपितु मानधन तथा अल्पाहार की स्वयं व्यवस्था करके इसे और सफलतापूर्वक चलाया गया। यहां तक कि चित्रा विहार तथा झण्डेवाला में भी जो इनकी शाखाएं शुरू की थीं। उन्हें बन्द करके दिलशाद गार्डन की इस मूल परियोजना को निरन्तर आगे बढ़ाया गया। समय-समय पर गोकुलपुरी में गड़िया लोहार बस्ती में सम्पर्क बनाया तथा गाजीपुर मण्डी के निकट झुग्गी बस्ती में कार्य प्रारंभ किया जो प्रगति पर है।

आइए अब यह जानें कि यहां कौन-कौन से व्यावसायिक कार्य सिखाए जाते हैं-

- चॉक बनाना- श्याम पट पर लिखने के चॉक बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। बने हुए चॉक सेवा भारती के अन्य केन्द्रों द्वारा खरीदे भी जाते हैं।
- मोमबत्ती बनाना- मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण पाकर उन बच्चों को बहुत लाभ हुआ। दिवाली के अवसर पर कमाने का अच्छा अवसर मिला। मोमबत्ती संस्थाओं तथा दुकानदारों को बेची जाती है।
- जूट बुनाई - जूट से बुनकर बैठने के आसन तथा

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट के लक्ष्य

- ऐसे उपेक्षित बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना, ताकि वे समाज को संभावित हानि न पहुंचाएं।
- उनको शिक्षा तथा संस्कार देकर उनका विकास करना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी तथा सक्षम बनाना।
- उनमें देशभक्ति एवं समाज सेवा की भवना भरकर उन्हें योग्य नागरिक बनाना।
- ऐसे बच्चों में बुद्धि, शक्ति, योग्यता एवं स्वाभिमान का विकास करके सफल व्यक्ति बनाना।
- बच्चों के माध्यम से ऐसे उपेक्षित एवं निर्धन परिवारों से निरन्तर सम्पर्क बढ़ाना, ताकि वे भारतीय संस्कृति से जुड़ें तथा देश के विकास में अपना योगदान दे सकें।

कई चरणों में हुआ योगाभ्यास

- सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प केंद्र में 21 जून 2023 को "अंतराष्ट्रीय योग दिवस" के अवसर पर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी योग अभ्यास कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें केंद्र में अध्ययन करने वाले सभी छात्र-छात्राओं एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। सामूहिक योगाभ्यास का कार्यक्रम दो चरणों में संपन्न हुआ। प्रातः 10 बजे केंद्र में पढ़ने वाले सभी बालकों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। पहले सत्र में कुल संख्या लगभग 50 थी।

ज्ञानप्रकाश जी के सान्निध्य में योगासन करती बच्ची

- योगाभ्यास का दूसरा सत्र दोपहर 2 बजे से प्रारंभ हुआ, जिसमें केंद्र की विभिन्न विधाओं में शिक्षा ग्रहण करने वाली लगभग 120 बालिकाओं तथा शिक्षिकाओं ने भाग लिया। योगाभ्यास का यह सत्र तीन चरणों में सम्पन्न हुआ, प्रथम चरण में प्राथमिक कक्षा की छात्राओं को योगाभ्यास कराया गया। दूसरे चरण में व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाली व्यस्क छात्राओं ने भाग लिया तथा तीसरे चरण में केंद्र की अध्यापिकाओं को योगाभ्यास कराया गया। इस प्रकार अन्तराष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम केंद्र में सभी के साथ मिलकर मनाया गया।

सजावट का सामान बनाया जाता है।

- सूत की बुनाई - दरी तथा कुर्सी, सोफे के बिछाने के आसन बनाये जाते हैं।
- विद्युत सुधार - बिजली के सामान्य उपकरण ठीक करने का कार्य सीखकर बच्चे कुछ कमाने भी लगे हैं।
- सिलाई-प्रशिक्षण- महिलाओं का सिलाई प्रशिक्षण सम्पर्क का भी अच्छा साधन है तथा स्वावलंबन का भी साधन है। यह प्रकल्प प्रारंभ से ही निरन्तर चल रहा है।
- सौन्दर्य प्रसाधन- सौन्दर्य प्रसाधन भी एक अच्छा व्यवसाय है। अपना कार्य प्रारंभ करना खर्चीला है परन्तु इसे सीखकर बड़ी दुकानों पर खूब काम मिल जाता है।
- मोबाईल रिपेयरिंग- इस कार्य की मांग खूब है। इसे सीखकर कुछ किशोरों ने अपना व्यवसाय शुरू किया है। कुछ बड़ी दुकानों पर काम करने लगे हैं।
- आर्ट एण्ड क्राफट - चित्रकला, पेन्टिंग तथा घरेलू बेकार वस्तुओं से कुछ सुन्दर तथा उपयोगी वस्तु तैयार करना अच्छी कला है। इसमें बालक तथा बालिकाएं सभी रुचि ले रहे हैं।
- कम्प्यूट प्रशिक्षण- कम्प्यूटर प्रशिक्षण में वे बच्चे सीखने आते हैं, जो आस-पास के विद्यालयों में नौंवी, दसवीं श्रेणी तक पहुंच चुके हैं। कम्प्यूटर सीखकर नौकरी के मार्ग सब तरफ खुल जाते हैं।
- छपाई-कढ़ाई - सूती कपड़ों पर डिजाईन बनाने के लिए कढ़ाई तथा छपाई का कार्य होता है। कुछ बच्चे डिजायन को तैयार करते हैं जिनसे कपड़ों पर छपाई की जाती है। प्रायः चादर, कवर, तकिए, मेजपोश या गिलाफ छापे जाते हैं।
- संगीत प्रशिक्षण- एक संगीत शिक्षक के द्वारा भजन, राष्ट्रीय गीत तथा सामाजिक लोक गीतों का प्रशिक्षण, बालक-बालिकों को दिया जाता है। विशेष आयोजनों के लिए भी ऐसे बच्चे संगीत प्रस्तुत करते हैं। प्रतिभाशाली बच्चे प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन पाकर अच्छे गायक भी बन सकते हैं।

नियमित कार्यक्रम

प्रायः सभी कार्यक्रम अपने अलग समय में सम्पन्न किए जाते हैं। फिर भी गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना,

योग व्यायाम, गीत आदि सभी में समान रूप से होते हैं।

- मंगलवार को बस्ती के अभिभावकों की बैठक होती है जिसमें बस्ती के प्रमुख परियोजना प्रभारी तथा कुछ कार्यकर्ता भाग लेते हैं। मास में एक बार हवन भी किया जाता है, जिसमें बस्ती के भाई-बहनों को भी आमंत्रित किया जाता है।
- शनिवार को शिक्षिका अभ्यास वर्ग होता है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाता है।
- दूसरे शनिवार को उस मास में जिन बच्चों, शिक्षिकाओं या कार्यकर्ता का जन्मदिन होता है, सब मिलकर मनाते हैं। यह आयोजन श्री प्रदीप गंडोत्रा जी सम्पन्न करवाते हैं। प्रबन्ध के लिए 14 (चौदह) कार्यकर्ताओं की एक कार्यकारिणी है। मास में अन्तिम रविवार को इसकी बैठक होती है।
- पूर्णिमा- प्रत्येक पूर्णिमा को महिलाओं के द्वारा भजन, कीर्तन का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिता की दृष्टि से यदि आवश्यक हो तो प्रत्येक मंगल को कार्यक्रम की तैयारी की जाती है।

केन्द्र में चित्रकला का प्रशिक्षण लेती छात्राएं

त्योहार मनाने की परम्परा

भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन हर तिथि का महत्व होता है। कुछ आवश्यक परम्परा इस परियोजना में निश्चित की गई है। वर्ष के प्रारंभ में जनवरी में मकर संक्रान्ति मनाते हैं तथा गणतंत्र दिवस मनाते हैं। बसन्त पंचमी पर सरस्वती पूजन किया जाता है तथा सामूहिक विवाह के आयोजन में सहयोग करना होता है। स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोपण होता है तथा राष्ट्रीय गीत गाए जाते हैं। कई दिन पहले से तैयारी की जाती है। रक्षाबन्धन पर सभी छात्र-छात्राएं परस्पर राखी बांधते हैं, कार्यकर्ताओं के साथ जाकर बस्ती में भी अपरिचितों को राम-राम करते है तथा राखी बांध कर परिचय बढ़ाया जाता है।

गणेश उत्सव पर बस्ती के लोगों को गणेश पूजन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कन्या पूजन का कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है। बस्ती की कन्याएं एकत्र करके अपने कार्यकर्ताओं के घर पूजन के लिए ले जाई जाती हैं। उन्हें भोजन के साथ उपहार भी दिए जाते हैं। दिवाली, दशहरे के आस-पास मेलों के आयोजन होते हैं। परियोजना के लिए कार्यकर्ता जाते हैं। इनमें स्टॉल भी लगाते हैं तथा प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हैं। सरकार द्वारा आयोजित ऐसे खेलों में चार बार स्ट्रीट चिल्ड्रेन को पुरस्कृत किया गया।

हुडको संस्था द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा चौथा स्थान इस परियोजना की बालिकाओं ने प्राप्त किया, जिन्हें केन्द्रीय मंत्री श्री हरदेव पुरी ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया। स्मरणीय है कि इन बालिकाओं को सम्मान पत्र के साथ नकद राशि (प्रथम -15000, द्वितीय- 10000, तथा चौथा - 5000) भी प्रदान की गई।

बस्ती की जनता के साथ मिलकर वाल्मीकि जयन्ती, कबीर जयन्ती तथा सन्त रविदास जयन्ती के उत्सव मनाए जाते हैं। कभी-कभी बस्ती के लोगों के साथ सहभोज का कार्यक्रम भी करते हैं जिसमें क्षेत्र के स्वयंसेवक

भी जुड़ते हैं।

श्री मदनलाल खन्ना जी के साथ 2014 से श्री ज्ञान प्रकाश जी इस परियोजना का कार्य कुशलतापूर्वक संभाल रहे हैं। उन्होंने अपनी क्षमता से अनेक दानदाता जोड़े हैं। अब भी सरकारी दर पर ही मानधन दिया जाता है। प्रशिक्षार्थियों को अल्पाहार दिया जाता है तथा सभी आवश्यक व्यय नियंत्रित किए जाते हैं। इस प्रोजेक्ट पर मासिक सत्तर हजार (70000) खर्च होता है जो ज्ञानप्रकाश जी स्वयं एकत्र करते हैं। शिक्षिका पद से सेवानिवृत्त होने के उपरान्त उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा गुप्ता भी उन्हें पूर्ण सहयोग करती हैं।

यह परियोजना सेवा भारती के उदेश्यों को सफलता की ओर ले तो जा रही है। साथ ही साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को मुख्यधारा से निरन्तर जोड़ रही है। इस परियोजना से सेवा भारती बस्तियों में बहुत प्रसिद्धि और सफलता प्राप्त कर रही है। ❐

कवर-2 का शेष...

बालक बालिका बौद्धिक एवं शारीरिक विकास शिविर

और एक गट चर्चा सत्र निश्चित था। पहले सामूहिक सत्र में बालक बालिकाओं के सामूहिक सत्र में सुश्री अंजू पांडे जी ने जो विषय रखा वो था सेवा भारती। उन्होंने विस्तृत रुप से बालक बालिकाओं को सेवा भारती की स्थापना से लेकर कौन कौन से सेवा कार्य सेवा भारती कर रही है समझाया और सेवा के प्रति बालक बालिकाओं में भाव जागृत किया। दिन के दूसरे सामूहिक सत्र को दक्षिणी विभाग के माननीय विभाग संघ चालक डॉक्टर दीपक शुक्ला जी के द्वारा लिया गया, विषय रहा जीवन का लक्ष्य। डॉक्टर साहब ने जीवन का लक्ष्य विषय को कहानियों के माध्यम से रखा। उन्होंने बताया कि कैसे एकलव्य ने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया, भगिनी निवेदिता, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, और डॉक्टर हेडगेवार जी का उदाहरण देते हुये बताया कि उन्होंने कैसे लक्ष्य को प्राप्त किया। बड़ी ही सरलता पूर्ण तरीके से उन्होंने बालक बालिका को जीवन में अपना लक्ष्य तय करने की प्रेरणा दी। दिन में एकमात्र गटचर्चा का विषय था परिवार और समाज में मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिये, बालक और बालिकाओं ने चर्चा में भाग लेते हुये विषय को भली-भांति समझा।

अंत में समापन सत्र रहा जिसे सेवा भारती दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री श्री शुकदेव जी ने लिया। बालक बालिकाओं से बातचीत करते हुये श्री शुकदेव जी ने शिविर की चर्चा की, उन्होंने शिविर में तय कार्यक्रमों सामूहिक सत्र, गटचर्चा, खेलों इत्यादि विषय में बच्चों से जानकारी ली और पूछा कि उन्हें शिविर में क्या अच्छा लगा, बच्चों ने भी उत्साह में पूरे जोश के साथ सभी विषय अच्छे लगे लेकिन खेलों के साथ भोजन सबसे अच्छा लगा बताया। शुकदेव जी ने भी कहानी के माध्यम से अपनी बात समाप्त की। शिविर में वर्गाधिकारी रही आचार्य प्रेमलता जी ने शिविर का पूर्ण वृत्त बताया। उन्होंने बताया कि शिविर में 8 वर्ष से 15 वर्ष तक के (58 बालक और 84 बालिका) कुल 142 बालक बालिकाओं ने हिस्सा लिया। विभाग तथा जिलों से कुल 21 भाई एवं बहन कार्यकर्ता और 20 शिक्षिका, निरीक्षिका बहनें पूरे समय शिविर में रहकर शिविर के कार्यक्रमों और व्यवस्थाओं में लगीं। आचार्य प्रेम लता जी ने बताया शिविर में सभी बालक बालिकाओं को संख्या और उम्र अनुसार चर्चा के लिए पांच गटों और खेल के लिए भी पांच गणों में बाँटा गया था और उनका नामकरण निम्न प्रकार किया गया- रानी लक्ष्मीबाई, भगिनी निवेदिता, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी और स्वामी विवेकानंद। वृत्त के बाद शिविर में हुई चित्रकला प्रतियोगिता में सभी गटों में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय आये बालक बालिकाओं को पुरष्कार दिया गया, शिविर के अन्य सभी बालक बालिकाओं को भी उपहार दिया गया। अंत में दक्षिणी विभाग की उपाध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा राय जी ने सभी का धन्यवाद किया। उन्होंने विद्यालय प्रशासन, शिविर में आये सभी वक्ताओं और अतिथियों का धन्यवाद किया। सभी बालक बालिकाओं का भी धन्यवाद किया कि वे अच्छी संख्या में आकर शिविर को सफल बनायें, अच्छे भोजन और अच्छी व्यवस्था के लिए धन्यवाद किया। कल्याण मंत्र के साथ शिविर का समापन हुआ। ❐

बन्दा बैरागी की अद्‌भुत वीरता

■ शुकदेव

बन्दा बैरागी का जन्म 27 अक्टूबर, 1670 को ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मण दास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी पर तीर चला दिया। इससे उसके पेट से एक शिशु निकला और तड़पकर वहीं मर गया। यह देखकर उनका मन खिन्न हो गया। उन्होंने अपना नाम माधोदास रख लिया और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिए। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे।

इसी दौरान गुरु गोविन्द सिंह जी माधोदास की कुटिया में आए। उनके चारों पुत्र बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़कर देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा। इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गोविन्द सिंह जी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। फिर पाँच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा। बन्दा हजारों सिख सैनिकों के साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिए। उन्होंने सबसे पहले श्री गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी। उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से 17 दिसम्बर, 1715 को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्द कर, हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख भी कैद किये गये थे। इनमें बन्दा के वे 740 साथी भी थे, जो प्रारम्भ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाए सिखों के सर काटकर उन्हें भाले की नोंक पर टांगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा वैरागी का मांस नोचा जाता रहा। काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा, पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में आज जहां हार्डिंग लाइब्रेरी है, वहां 7 मार्च, 1716 से प्रतिदिन 100 वीरों की हत्या की जाने लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा- तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किया, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है? बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया- मैं तो प्रजा के पीड़ितों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था। क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है। बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हें? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता, क्योंकि यह शरीर ही दु:ख का मूल है। यह सुनकर सब ओर सन्नाटा छा गया। भयभीत करने के लिए उनके पांच वर्षीय पुत्र अजय सिंह को उनकी गोद में लेटाकर बन्दा के हाथ में छुरा देकर उसको मारने को कहा गया। बन्दा ने इससे इनकार कर दिया। इस पर जल्लाद ने उस बच्चे के दो टुकड़े कर उसके दिल का मांस बन्दा के मुंह में ठूंस दिया, पर वे तो इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। गरम चिमटों से मांस नोचे जाने के कारण उनके शरीर में केवल हड्डियां शेष थीं।

8 जून, 1716 को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिए। ❐

अद्‌भुत, अकल्पनीय, अविश्वसनीय किन्तु सत्य

■ प्रतिनिधि

आपसे कोई पूछे भारत के सबसे अधिक शिक्षित एवं विद्वान व्यक्ति का नाम बताइए, जो डॉक्टर भी रहा हो, वकील, आईपीएस अधिकारी, आईएएस अधिकारी, विधायक, मंत्री, सांसद भी रहा हों, चित्रकार, फोटोग्राफर भी रहा हो, मोटेविशनल स्पीकर भी रहा हो, पत्रकार भी रहा हो, कुलपति भी रहा हो, संस्कृत, गणित का विद्वान भी रहा हो, इतिहासकार भी रहा हो, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र का भी ज्ञान रखता हो, जिसने काव्य रचना भी की हो। अधिकांश लोग यही कहेंगे क्या ऐसा संभव है? आप एक व्यक्ति की बात कर रहे हैं या किसी संस्थान की? पर भारतवर्ष में ऐसा एक व्यक्ति मात्र 49 वर्ष की अल्पायु में भयंकर सड़क हादसे का शिकार होकर इस संसार से विदा भी ले चुका है! उनका नाम है डॉ. श्रीकांत जिचकर। श्रीकांत जिचकर का जन्म 1954 में एक संपन्न मराठा कृषक परिवार में हुआ था। वे भारत के सर्वाधिक पढ़े-लिखे व्यक्ति थे, जो गिनीज बुक आफ रिकार्ड में दर्ज है। डॉ. श्रीकांत ने 20 से अधिक डिग्री हासिल की थी। कुछ नियमित और कुछ पत्राचार के माध्यम से। वह भी फर्स्ट क्लास, गोल्डमेडलिस्ट, कुछ डिग्रियां तो उच्च शिक्षा में नियम ना होने के कारण नहीं मिल पाईं, जबकि इम्तिहान उन्होंने दे दिया था! उनकी डिग्रियां/शैक्षणिक योग्यता इस प्रकार थीं- एसबीबीएस, एमडी गोल्ड मेडलिस्ट, एलएलबी, एलएलएम, एमबीए, बैंचलर इन जर्नलिज्म, संस्कृत में डी.लिट. की उपाधि, यूनिवर्सिटी टॉपर। उच्च स्नातकोत्तर (एम.ए.) इंगलिश, हिन्दी, इतिहास, साइकालॉजी, सोशियोलॉजी, पॉलिटिकल साइंस, आर्कियोलॉजी, एंथ्रोपोलॉजी। श्रीकान्त जी 1978 बैच के आईपीएस व 1980 बैच के आईएएस अधिकारी भी रहे! 1981 में महाराष्ट्र में विधायक बने। 1992 से लेकर 1998 तक राज्यसभा सांसद रहे। श्रीकांत जिचकर ने वर्ष 1973 से लेकर 1990 तक का समय यूनिवर्सिटी के इम्तिहान देने में गुजारा! 1980 में आईएएस की केवल 4 महीने की नौकरी कर इस्तीफा दे दिया! 26 वर्ष की उम्र में देश के सबसे कम उम्र के विधायक बने। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री भी बने। 14 पोर्टफोलियो हासिल कर सबसे प्रभावशाली मंत्री रहे। महाराष्ट्र में पुलिस सुधार किए। 1992 से लेकर 1998 तक बतौर राज्यसभा सांसद संसद की बहुत सी समितियों के सदस्य रहे, वहां भी महत्वपूर्ण कार्य किये। 1999 में कैंसर लास्ट स्टेज का डायग्नोज हुआ। डॉक्टर ने कहा आपके पस केवल एक महीना है!

अस्पताल में मृत्यु शैया पर पड़े हुए थे, लेकिन आध्यात्मिक विचारों के धनी श्रीकांत जिचकर ने आस नहीं छोड़ी। उसी दौरान कोई संयासी अस्पताल में आया। उन्होंने उन्हें ढांढस बंधाया। संस्कृत भाषा, शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। कहा- तुम अभी नहीं मर सकते .... अभी तुम्हें बहुत काम करना है। स्वस्थ होते ही राजनीति से संन्यास लेकर.... संस्कृत में डी.लिट. की उपाधि अर्जित की! वे कहा करते थे- संस्कृत भाषा के अध्ययन के बाद मेरा जीवन ही परिवर्तित हो गया है! मेरी ज्ञान पिपासा अब पूर्ण हुई है। उन्होंने पुणे में संदीपनी स्कूल की स्थापना की। नागपुर में कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की, जिसके पहले कुलपति भी वे बने। उनका पुस्तकालय किसी व्यक्ति का निजी सबसे बड़ा पुस्तकालय था, जिसमें 52000 के लगभग पुस्तकें थीं। उनका एक ही सपना बन गया था, भारत के प्रत्येक घर में कम से कम एक संस्कृत भाषा का

विद्वान हो तथा कोई भी परिवार मधुमेह जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों का शिकार ना हो! यूट्यूब पर उनके केवल 3 ही मोटिवेशनल हेल्थ फिटनेस संबंधित वीडियो उपलब्ध हैं। ऐसे असाधारण प्रतिभा के लोग, आयु के मामले में निर्धन ही देखे गए हैं। अति मेधावी, अति प्रतिभाशाली व्यक्तियों का जीवन ज्यादा लंबा नहीं होता। शंकराचार्य, महर्षि दयानंद सरस्वती, विवेकानन्द जी भी अधिक उम्र नहीं जी पाए थे! 2 जून, 2004 को नागपुर से 60 किलोमीटर दूर महाराष्ट्र में ही भयंकर सड़क हादसे में श्रीकांत जिचकर का निधन हो गया!

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार व Holistic Health को लेकर उनका कार्य अधूरा ही रह गया!

विभिन्न व्यक्तियों के जन्म दिवस को उत्सव की तरह मनाने वाले हमारे देश में ऐसे गुणी व्यक्ति को कोई जानता भी नहीं है, जिसके जीवन से कितने ही युवाओं को प्रेरणा मिल सकती है। ऐसे शिक्षक, ज्ञानी, उत्साही व्यक्तित्व, चिकित्सक, विधि विशेषज्ञ, प्रशासक व राजनेता के मिश्रित व्यक्तित्व को शत्-शत् नमन। ❐

व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा)

■ कु. संस्कृति

आषाढ़ मास की पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा तथा गुरु पूर्णिमा कहलाती है। गुरु महिमा हमारे देश में अति प्राचीन काल से गाई जाती रही है । कहा गया है- 'गुरु बिना ज्ञान न होय।' प्राचीन काल से गुरु ध ारण करने की तथा शिक्षा-दीक्षा लेने की परम्परा चली आ रही है। महामानव वेदव्यास महाराज को सम्मान देने के लिए उनके जन्म दिवस को ही व्यास पूर्णिमा या गुरु पूर्णिमा का नाम दिया गया।

महर्षि वेदव्यास गुरुओं के गुरु हैं। भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ वेदों को लिखित स्वरूप उन्होंने ही प्रदान किया। इससे पूर्व वेदज्ञान श्रुति कहलाता था। गुरु से सुनकर स्मरण करके ही इस ज्ञान को लिया और दिया जाता था। व्यास जी ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद संज्ञा देकर इसे विभाजित किया। भारतीय इतिहास को व्यास जी ने अठारह पुराणों में प्रस्तुत किया। महाभारत जैसा महान ग्रन्थ रचा जिसमें राजनीति, ध र्मनीति, सामाजिक व्यवस्था आदि सभी समस्याओं के समाधान निहित हैं। संसार को व्यास जी की अद्भुत देन हैं। श्रीमद्भगवतगीता इसी महाभारत का अंश है जिसके अनुवाद संसार की सभी भाषाओं में हो चुके हैं।

श्रीमद्भागवत पुराण तो भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात स्वरूप ही माना जाता है। जितना साहित्य वेदव्यास जी ने लिखा है उतना साहित्य एक जीवन में पढ़ना भी कठिन है। उनके एक-एक ग्रन्थ पर अनेक टीकाएं लिखी गई हैं तथा लिखी जा सकती हैं। ऐसे महापुरुष के जन्म दिवस को व्यास पूर्णिमा मानकर गुरु पूजा करना उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करना ही है।

गुरु के महत्व को साहित्य में सभी कवियों और मनीषियों ने गाया है। शास्त्रों में कहा गया है -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

अर्थात् गुरु में परमात्मा के सभी लक्षण विद्यमान हैं। वह ज्ञान और सद्गुणों को उत्पन्न करता है, विष्ण ु के समान संकट में शिष्य का पालन करता है तथा शिव के समान दुर्गुणों को विनाश करता है। वह साक्षात् ईश्वर ही है। कबीर तो गुरु को ईश्वर से बढ़कर ही मानते हैं-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दिया बताय।।

गुरु अपने शिष्य को संस्कार देने के लिए प्रेम के साथ सख्ती भी करता है-

गुरु कुम्हार शिष गुम्भ है गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दे बाहर बाहै चोट।।

स्पष्ट कहा है - गुरु बिन ज्ञान न होय अर्थात् ज्ञान प्राप्ति के बिना तो मोक्ष नहीं और गुरु बिना ज्ञान नहीं। अर्थात् गुरु के माध्यम के बिना कल्याण संभव नहीं। ❐

गुरु से ज्ञान, ज्ञान से मोक्ष

■ इन्दिरा मोहन

यह संसार किसी को भी आश्चर्य में डालने वाली विविधताओं से भरा हुआ है, किन्तु इस अनेकता के भीतर सनातन एकता छिपी हुई है। एक जीवंत शक्ति के रूप में यह तमाम बदलावों के पीछे उपस्थित है, जो स्वयं बदलती नहीं, सबको एक साथ रखती है, सृजन करती है और फिर संहार करती है। भारतीय मनीषियों की दृष्टि में यह एकता ही चेतना है, ब्रह्म है, परमात्मा है जिसकी जानकारी हमें शास्त्रों और गुरु द्वारा प्राप्त होती है। संसार सागर से पार उतारने वाला गुरु ही है। गुरु की करुणा, गुरु की भक्त -वत्सलता शिष्यों का जीवन बदलने की सामर्थ्य रखती है - 'गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा' का चिन्तन हमारे देश की अति प्राचीन परंपरा रही है। गुरु के संकल्प से ही शिष्य ज्ञान-गंगा में गोते लगाता हुआ अपने लक्ष्य को पा लेता है।

यद्यपि प्रत्येक जीव कर्म करने में स्वतंत्र है किन्तु कर्मफल भोगने में परतंत्र सा ही है। प्रश्न उठता है कि कर्म के इस बन्धन से मुक्ति कैसे होगी! वास्तव में कर्म ही पुरुष है, पुरुष ही कर्म है। जैसे बीज और अंकुर में, जल और तरंग में भेद नहीं है वैसे ही पुरुष, कर्म और क्रिया में वास्तविक भेद नहीं है। मन से जो कर्म किया जाता है वह कर्म है और मन से जो कर्म नहीं किया जाता है वह कर्म नहीं है। अतः मन को सदा आसक्ति-रहित रखना चाहिए, क्योंकि जैसा मन वैसा ही वह पुरुष है।

कर्म बंधन से मुक्त होने के लिये यह सत्य समझना होगा कि कार्य का कर्ता होने के कारण ही जीव उसका फल भोगने वाला होता है। गुरु वसिष्ठ कहते हैं कि संकल्प ही मन को बांधता है और संकल्प के अभाव से मुक्ति है। जब तक शरीर है तब सब इच्छाओं का त्याग कर आत्मभाव में स्थित रहते हुए योग्य कर्मों को करते रहना है। आत्मज्ञान की प्राप्ति में साधकों की योग्यता ही मुख्य होती है। चलना तो शिष्य को ही होगा, अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास उसी को करना होगा। गुरु के प्रति आस्था, श्रद्धा, विश्वास एवं समर्पण देख कर विश्वामित्र जी ने श्रीराम की प्रशंसा की - ''तुम्हारी बुद्धि व्यास पुत्र शुकदेव जैसी है यद्यपि उन्हें परम तत्व का ज्ञान हो गया था, परन्तु यही परमार्थ वस्तु है - ऐसा विश्वास न होने के कारण उन्हें शान्ति नहीं मिली।'' राम ने पूछा, हे मुने! शुक के ज्ञान प्राप्त होने की कथा आप मुझे सुनाइए। उन्होंने कहा कि भगवान व्यास के पुत्र सब शास्त्रों में निपुण थे। यह सोच कर कि मेरे पिता तो सर्वज्ञ हैं वे अपनी शंकाओं के समाधान के लिये पिता के पास गये। उनके सामने अपनी जिज्ञासा रखी। पुत्र मैं सर्व तत्वज्ञ नहीं हूं, राजा जनक हैं। शुक को उन्होंने राजा जनक के पास भेज दिया। शुकदेव की परीक्षा लेते हुए राजा जनक ने उन्हें 7 दिन तक अनादरपूर्वक द्वार पर खड़ा रखा। 7 दिन तक राजमहल के आंगन में इन्तजार करवाया। इसके बाद दास-दासियों, सुन्दर स्त्रियों सहित राजसी भोगों के बीच रखकर परीक्षा की। इस प्रकार उपेक्षा, अपमान और भोग -विलास की तीनों परीक्षाओं में निर्विकार शान्त, सौम्य स्थिति देखकर राजा जनक शुकदेव के पास गये। शुकदेव ने प्रश्न किया - मैं परमानन्द का जिज्ञासु हूं,

इस संसार की उत्पत्ति कैसे हुई, कैसे इसकी निवृत्ति होगी? राजा बोले, हे शुक! यह संसार अपने चित्त में उत्पन्न होता है और चित्त के संकल्प और स्फुरण रहित होने पर क्षीण हो जाता है। चित्त के संकल्प में ही संसार की स्थिति है। दिखने वाले पदार्थों के लिये जब तक मन में वासना है तभी तक संसार का अनुभव है। आपका चित्त, वैराग्य, विवेक से पूर्ण काम हो गया है। बस आप अपने इस भ्रम को छोड़ दें कि अभी कुछ और पाना शेष है। यह भ्रम ही प्राप्त को भी अप्राप्त और पास को भी दूर कर देता है। यह भ्रम ही बाहयी स्थिति (आत्मबोध) की अपूर्णता है।

इस संवाद के बाद वसिष्ठ मुनि आश्वासन देते हैं कि जैसे लोग दीपक से रात्रि का अंधकार दूर करते हैं वैसे ही मैं श्रीराम आदि राजकुमारों के अन्तकरण के अज्ञान को ज्ञान से दूर करता हूं। अपने उपदेश का आरम्भ करते हुए वे कहते हैं यह जगत इन्द्रजाल से रचित कथा-कहानी की तरह, बालक को डराने के लिये कल्पित भूत-पिशाच अथवा स्वप्न में देखे गये नगर-गांव, पर्वत, नदी आदि की तरह हमारे मन का विलास है। जीव ने जीवन में जो जगत देख था, मृत्यु के अनन्तर उसी का उसको स्मरण होता है। जन्म होने पर उसी का वह अनुभव करता है। वासना के भीतर अनेक शरीर हैं, उन शरीरों के भीतर भी अनेक वासनाएं और उनके अनेक शीरर हैं। इस संसार में कोई सार नहीं। केले की त्वचा के समान एक के पीछे एक स्थित है।

परमार्थ-

सत्य परमात्मा रूपी विशाल महासागर में बार-बार पुरानी नई असंख्य सृष्टि रूपी तरंगें उठती रहती हैं। इस सृष्टि के कई कल्प बीत चुके हैं, आगे भी बदलते रहेंगे। तुम राम भी हर त्रेतायुग में अवतार लेते आये हो, आगे भी लेते रहोगे। उसी तरह मैं वसिष्ठ भी कितनी बार वसिष्ठ के रूप में उत्पन्न होता आया हूं। जिन लोगों ने ऋद्धि-सिद्धि, लोक-लोकान्तर, ब्रहमलोक, मोक्ष आदि जो कुछ प्राप्त किया है वह सब शास्त्र अनुकूल आचरण और पुरुषार्थ से ही प्राप्त किया है। जो लोग इन्हें देवता की कृपा अथवा भाग्य के अधीन मानते हैं, वो अज्ञानी कुसंस्कारी हैं। उनकी बुद्धि दूषित, जड़ और विकृत है। शास्त्र के विरुद्ध किया गया आचरण अनर्थ का हेतु है। धर्म की उपेक्षा कर मनमानी करने वाला व्यक्ति स्वयं दरिद्रता, रोग, बंधन जैसी मुसीबतों से घिर जाता है, जबकि पुरुषार्थ को धर्म द्वारा बढ़ाया जा सकता है। लगातार मेहनत करने वाला व्यक्ति मेरु पर्वत को भी निगलने की ताकत प्राप्त कर लेता है। मनुष्य जैसा शुभ -अशुभ अभ्यास करता है वैसा ही बन जाता है। इसलिये अपनी वासना रूपी नदी को सदा शुभ, शुक्ल, कल्याण प्रदा ही प्रवाहित करना चाहिए। गांव जाने की जिसकी इच्छा है वह गांव पहुंचता है, शहर की इच्छा रखने वाला शहर पहुंचता है।

बन्धन और मोक्ष-

जगत के पदार्थों के प्रति वासना के दृढ़ होने को बन्धन कहते हैं। जिसे सुख-दुख के भोग की इच्छा है वही बन्धन का अनुभव करता है। राग और द्वेष रूपी वासना की रस्सियों से जकड़े हुए जीव संसर में रस्सी से बंधे पशु पक्षी की तरह बन्धन को प्राप्त होते हैं।

बन्धन के कारण-

वासना से भरे चित्त ने अपने को केवल शरीर मान लिया है जो जन्म-मृत्यु का, रोग-शोक का कारण है। शरीर में ही स्वयं को सीमित मान लेना ही अविद्या है जो बन्धन में डालती है। अपने वास्तविक स्वरूप को न जान कर केवल शरीर, मन, बुद्धि मानने पर अज्ञान से कर्ता-भोक्ता का भ्रम उत्पन्न होता है जो दुख का कारण है, संसार में आवागमन का कारण है।

मोक्ष का स्वरूप -

इन्द्रियों के शान्त हो जाने पर जीव मन के गुणों को त्याग करके ब्रह्म के गुणों को धारण कर लेता है तब वह मुक्ति का अनुभव करता है। जब जगत के विषयों का इतना विस्मरण हो जाए कि किसी वस्तु के लिये न राग हो न द्वेष तब निर्मल शुद्ध बुद्धि से मोक्ष का अनुभव होता है। आत्मा के यथार्थ ज्ञान के कारण जीव सब प्राणियों को देखता है, किसी प्रकार द्वैत या भेद नहीं देखता तब वह मुक्त होता है। ज्ञान के अतिरिक्त मोक्ष पाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। यहां कर्म त्याग

की जरूरत नहीं कर्म त्याग उसके वश में है ही नहीं, प्रकृति अथवा स्वभाव सब कर्म करवाता है। यहां तो विचार के द्वारा आत्मज्ञान से अपनी वासनाओं को शांत करना है। अतएव परमात्मा को प्राप्त करने में ज्ञान ही एक मात्र उपाय है।

मोक्ष प्राप्ति का उपाय -

जैसे भूमि से सब अन्न उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार अपने मन को नियंत्रित करने से, संयमित करने से सब साधन, सुविधा, सम्पत्ति प्राप्त होती है। सब प्राणियों के हृदय में विष्णु (आत्मा) निवास करते हैं। अपने भीतर रहने वाले व्यापक विष्णु को छोड़कर बाहर विष्णु की तलाश करना अज्ञान है। ये संसार नाम वाली माया, अपने अहंकार को जीत लेने पर ही शान्त होती है। वसिष्ठ जी कहते हैं, ''जो पुरुष कुछ भी, कहीं भी और कभी भी प्राप्त करता है वह अपने अभ्यास रूपी वृक्ष का फल है। यदि गुरु आदि किसी व्यक्ति का, उसके पुरुषार्थ के बिना ही उद्धार कर सकते हैं तो वे ऊँट, हाथी और बैल का उद्धार कयों नहीं कर देते?

ईश्वर सबके भीतर रहता है -

ईश्वर कहीं दूर नहीं है। चिन्मात्र (चेतन) रूप से शरीर के भीतर सदा उनका वास है। शिव भी चिन्मात्र, विष्णु, ब्रह्मा एवं सूर्य भी चिन्मात्र ही हैं। न वे दूर हैं, न कठिनाई से प्राप्त होने वाले हैं। वे तो आत्मानन्द के रूप में प्रकट होते हैं। ''निज हृदय गुफा में वास करने वाले ईश्वर को छोड़कर दूसरे ईश्वर की तलाश मानो हाथ में आई कौस्तुभ मणि को छोड़कर दूसरे रत्न की तलाश करना है।'' शुद्ध आचार -विचार द्वारा अपने भीतर 'परम शिव आत्मा' की पूजा करना ही असली पूजा है। इस साधना के लिये वासना एवं अहंकार का त्याग आवश्यक है।

ज्ञान से ही ईश्वर की प्राप्ति -

देवों के देव परम परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान द्वारा ही होती है। जिनकी बुद्धि चेतन नहीं हुई, जिनका चित्त चंचल है केवल उन्हीं के लिये बाहरी देव-पूजा की विधि है। भगवान की पूजा करने के कष्ट और तप से मनुष्य को संसार से वैराग्य उत्पन्न होगा, जो समय पाकर उसके मन को शुद्ध कर देगा। जैसे कच्चा आम धीरे-धीरे पक जाता है ऐसे ही उसका मन नित्य के अभ्यास और विवेक से शुद्ध, शान्त और सम हो जाता है। मैं कौन हूं? यह संसार क्यों है, कैसा है, क्या है? जनम-मरण क्यों होते हैं? आदि प्रश्नों की विचार द्वारा ही जिज्ञासा पैदा होती है। शास्त्रों के पठन-पाठन से तथा गुरु की शरण में बैठकर इन प्रश्नों का उत्तर मिलता है। इन पर विचार करने से मन धीरे-धीरे परमात्मा की ओर समर्पित होता जाता है। ❐

जीवन के 6 सत्य

1. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने खूबसूरत हैं! क्योंकि लंगूर और गोरिल्ला भी अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं।
2. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका शरीर कितना विशाल और मजबूत है! क्योंकि श्मशान तक आप अपने आपको नहीं ले जा सकते।
3. आप कितने भी लंबे क्यों न हों, मगर आने वाले कल को आप नहीं देख सकते।
4. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपकी त्वचा कितनी गोरी और चमकदार है! क्योंकि अंधेरे में रोशनी की जरूरत पड़ती ही है।
5. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप नहीं हंसेंगे तो सभ्य कहलायेंगे! क्योंकि आप पर हंसने के लिए दुनिया खड़ी है।
6. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने अमीर हैं और दर्जनों गाड़ियां आपके पास हैं! क्योंकि घर के बाथरूम तक आपको चल के ही जाना पड़ेगा। इसलिए संभल के चलिए... जिंदगी का सफर छोटा है। हंसते-हंसते काटिये, आनंद आएगा। ❐

जीवन कलश से छलकती बूंद

■ डॉ. (श्रीमती) संतोष माटा

जीवन की इस संध्या बेला में जो कुछ देख रही हूं, परिवर्तन बहुत जल्दी-जल्दी आ रहा है। आज का युवा वर्ग इस मानव देह की विशेषताओं को जैसे समझना ही नहीं चाहता। उसे अपने ऊपर इतना विश्वास है कि वह किसी भी तरह अपने जीवन को बिता इस संसार से मुक्त होने के लिए तैयार है। आज तो इस छलकती छोटी सी बूंद ने मुझे बाध्य ही कर दिया कि मैं उसे कमलबद्ध करूं और मैं बैठ गई उसे लिखने। सोच रही थी कि आज की औलाद अपनी युवावस्था में जीवन का भौतिक सुख लेने के साथ-साथ शारीरिक सुख भी ले लेती है किन्तु अपने उत्तरदायित्व से अपने को मुक्त रखना चहती है। ऐसा ही देखा है मैंने अपने जीवन काल में अभी तक नानी और दादी बनने के बाद भी। आज कल बच्चे लिव-इन में रहना पसंद करते हैं। क्यों मुझे अपने आप स्मरण हो आती है वह स्मृति जिसे किसी वक्त मेरे युवा साथी ने कहा था जिसके घर गाय स्वयं ही आ जाए वह दूध के लिए इधर-उधर क्यों भटके यानी वह शादी करके सारा जीवन एक के साथ क्यों बंधन में पड़े। तब शायद मेरी समझ में यह बात नहीं आई थी लेकिन आज की पीढ़ी को देखकर मुझे स्वयं यह अनुभव होने लगा है कि जब लड़की स्वयं लड़के के साथ रहने के लिए तैयार हैं बिना शादी के। परिवार को बिना बताए या बता कर भी, फिर शादी की क्या जरूरत। उन सबको इस विवाह से क्या लेना-देना जब उनकी सभी आवश्यकताएं पूरी हो रही हैं।

अपना-अपना बैंक बैलेंस है मर्जी से खर्च करते हैं हिसाब रखते हैं और दोनों जब थके मांदे अपने घोंसले में लौटते हैं और फिर फ्रिज से ढूंढ कर कुछ भी माइक्रोवेव में गर्म किया खाना उन्हें स्वादिष्ट लगने लगता है। या फिर फ्रिज ऐमेजॉन है ना। और भी तो कई तरह के घर की सेवा के लिए ऐप खुले हुए हैं वहीं से पेट भरने के लिए कई व्यंजन तैयार मिलते हैं। यह सब बहुत हैं। दिन भर की थकान मिटाने के लिए उनका बिस्तर उनकी अगवानी करता है। हां कभी-कभी बिस्तर बनाने की जरूरत महसूस नहीं हाती, क्योंकि फिर इसी में आ कर लेटना है कई बार तो कोई सहायक भी नहीं होता क्योंकि समय ही नहीं किसी को रखकर उससे काम लिया जा सके। मैंने देखा सामने ऐसे ही दुकेले परिवार ने अपनी मम्मी को बुलाया क्योंकि विपदा ही ऐसी आ पड़ी थी। पत्नी, नहीं-नहीं साथी (उसे पत्नी कहना तो ठीक नहीं होगा जब विवाह ही नहीं किया तो पत्नी कैसे) को दुर्घटना में इतनी चोट लग गई थी कि डॉक्टर ने राड और प्लेट और न जाने कितने स्क्रू लगाकर उसे पट्टियों में लपेट दिया था। ऐसी हालत में वह चलने-फिरने से तो क्या उठने बैठने से भी लाचार थी। हुआ यूं कि सड़क पर चलते हुए किसी मोटर साइकिल वाले की ठोकर से एड़ी की हड्डी टूट गई। ऐसे में वह भले मानुष की सहायता से डॉक्टर के पास तो पहुंच गई अस्पताल में। लेकिन उन्होंने कहा कोई आपके परिवार का बंदा भी होना चाहिए। अब हार कर पुत्र को अपनी मां को ही बुलाना पड़ा। मैंने स्वयं देखा कि पुत्र ने किस तरह उसकी सेवा की यहां तक कि उसकी विष्ठा और निकलते स्राव को भी धोने का काम किया। सचमुच ऐसे सुपुत्र को मैं तो सिर झुकाती हूं।

मगर याद कर रही हूं उस समय को जब कभी भगवान ना करे वृद्धावस्था में किसी को चोट लग

जाए और ऐसी अवस्था में किसकी शरण लेनी होगी। युवावस्था में तो शरीर की सारी आवश्यकताएं पूरी हो गईं, किन्तु आज सोच रही हूं कि यह पीढ़ी किस भारतीय संस्कृति से बंधी हुई है क्यों नहीं उसे अपनी वंश वृद्धि का ख्याल आता है। उनके लिए पितृ ऋण कुछ नहीं और न अभी वृद्धावस्था में है। किन्तु बुढ़ापे में वह किसका मुंह देखेंगे, कौन अस्पताल ले जाएगा या फिर किसी प्रकार की भी सहायता करेगा। पैसा तो उपयोग करने के लिए होता है, जमा करने के लिए नहीं। किसके लिए इतना जमा कर रहे हैं न दिन की सुध है ना रात का कोई सुख ही। कभी उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को जानने की कोशिश भी नहीं की। काम भी खूब करते हैं तो किसके लिए पैसे कमाते हैं किसे देकर जाएंगे उसका भी ख्याल नहीं, क्योंकि मैंने देखा है कि किसी गरीब को भी देते हुए उनके हाथ बंधे हुए हैं। हां, सब कुछ छोड़ जाने के बाद कहीं भी धन-संपत्ति या अचल संपत्ति कहीं चली जाए। इसकी उन्हें कतई चिंता नहीं। वंश वृद्धि या फिर संस्कार यह सब भारतीयों की ढकोसलेबाजी है, पुराने विचार हैं। आज के युवक अपने मन की करते हैं। जिधर मन आया चित्त बोला उसी को किया चाहे वह विदेश का हो, या देश का, घर का हो या बाहर का, पड़ोसी का हो या परिवार का जो पुराना परिवार था, जहां पैदा हुए थे जीवन वहीं। जीवन में आस्था नहीं, विश्वास नहीं। आज की पीढ़ी का मूल मंत्र 'जब तक जियो सुख से जियो, ऋण को लेकर घी को पियो।' 8400000 योनियों के बाद जाकर मानव देह मिलती है और उसे इस तरह उद्देश्यहीन बनाकर आप क्या बताना चाहते हैं कि इस धन का जितना अधिक सदुपयोग करें उतना ही अधिक संतोष प्राप्त करेंगे। धन तो केवल उपयोग के लिए होता है न कि जमा करने के लिए। साथ न कोई ले गया है और न कोई ले जाएगा। अगली पीढ़ी के लिए, वह तो पैदा ही नहीं की। आज का पढ़ा-लिखा आभिजात्य वर्ग उत्तरोत्तर अपने कार्य में अति व्यस्त रह कर निरंतर भारत के नाम को उजागर कर रहा है, लेकिन यह वर्ग गिना चुना है, अपनी इन विशेषताओं के कारण भारत का नाम ऊंचा करने में सहयोग दे रहा है लेकिन इसमें यही कहा जा सकता है कि 140 करोड़ की आबादी वाले देश में ऐसे लोगों की गिनती उंगलियों पर ही हो सकती है। यह भी सच है आज के इस युवा वर्ग को जमा करने का कोई विशेष आग्रह नहीं है। वह तो या तो दुनिया देखना चाहते हैं या फिर अलग-अलग देशों के भोजन का आश्वासन कर अपनी शारीरिक और मानसिक क्षुधा शांत करते हैं। अधिकांश लोगों में जीवन का कोई विशेष उद्देश्य नहीं है। अपने मोबाइल में व्यस्तता उनके जीवन को समय बिताने के लिए काफी है। इस मनुष्य योनि में रह कर भी पशुवत जीवन बिताते हैं। ❐

गतिविधियां पूर्वी विभाग

- अप्रैल माह में विभाग के गांधी नगर जिले के 'हेडगेवार भवन' पर स्मार्ट डिजिटल क्लास का आयोजन किया गया। एसडीएमओ बंसी लाल मन्दिर (श्री राम सेवा केन्द्र) के दानदाताओं के द्वारा बच्चों को बिस्किट और फ्रूटी आदि बांटी गई।
- मयूर विहार में 29 अप्रैल को शिक्षिका अभ्यास वर्ग रखा गया। विभिन्न विषयों पर शिक्षिकाओं से परिचर्चा रही। सिलाई के बच्चों से इस विषय में अनेक बातों की चर्चा की गई। कम्प्यूटर के सेवित जन बच्चों को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। कल्याण मंत्र से वर्ग समाप्त, अन्त में जलपान हुआ।
- 5 मई को सिलाई की कक्षा में छात्राओं की प्रैक्टिकल परीक्षा ली गई। संख्या -5 रही।
- 6 मई शनिवार मयूर विहार जिले के पन्ना धाय केन्द्र पर सिलाई का छात्राओं की सैद्धान्तिक और मौखिक परीक्षा ली गई। संख्या 5/5 रही।

जानिए गायत्री माता और गायत्री मंत्र को

■ प्रतिनिधि

गायत्री जयन्ती माता गायत्री के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाई जाने वाली एक पौराणिक परम्परा है। ज्येष्ठ माह की एकादशी का दिन माता गायत्री के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दू धर्म कैलेंडर के अनुसर साल 2023 में गायत्री जयंती 31 मई को मनाई गई। हालांकि हिन्दू धर्म के फैलाव और मत भिन्नता के कारण भारत देश के दक्षिणी हिस्से में गायत्री जयंती श्रावण पूर्णिमा के दिन भी मनायी जाती है। साल 2023 में श्रावण पूर्णिमा गायत्री जयंती 31 अगस्त को मनायी जाएगी। श्रावण पूर्णिमा गायत्री जयंती को संस्कृत दिवस के रूप में जाना जाता है।

वेद माता गायत्री – माता गायत्री को त्रिमूर्ति देव ब्रह्मा, विष्णु और महेश की देवी माना जाता है। सभी वेदों की देवी होने के कारण गायत्री को वेद माता के नाम से भी जाना जाता है। उन्हें समस्त सात्विक गुणों का प्रतिरूप माना गया है और ब्रह्मांड में मौजूद समस्त सद्गुण माता गायत्री की ही देन है। माता गायत्री को देवताओं की माता और देवी सरस्वती, पार्वती और लक्ष्मी का अवतार माना जाता है।

माता गायत्री का विवाह – पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाशक्ति माता गायत्री का विवाह ब्रह्मा जी से हुआ माना जाता है। हिन्दू वैदिक साहित्य और पुराणों के अनुसार ब्रह्मा जी की दो पत्नी हैं– एक गायत्री और दूसरी सावित्री। प्रजापति ब्रह्मा की अर्धांगिनी होने के नाते दुनिया में निरंतरता बनाए रखने के लिए माता गायत्री चेतन जगत में कार्य करती हैं, वहीं माता सावित्री भौतिक जगत के संचालन में मदद करती हैं। इसे ऐसे समझें जब हम किसी तरह के आविष्कार या नयी उत्पत्ति से संबंधित खोज करते हैं तो वह मां सावित्री की अनुकंपा से प्राप्त होता है। वहीं माता गायत्री प्राणियों के भीतर विभिन्न प्रकार की शक्तियों के रूप में प्रवाहित होती हैं, वे किसी प्रकार की प्रतिभा, विशेषताओं और ज्ञान के रूप में हो सकती हैं। जो व्यक्ति माता गायत्री रूपी शक्ति के उपयोग का विधान ठीक तरह जानता है वह जीवन में वैसे ही सुख उठा सकता है जिसकी वह कामना करता है।

गायत्री मंत्र की उत्पत्ति– मान्यताओं के अनुसार पहली बार गायत्री मंत्र का आभास परमपिता ब्रह्मा जी को हुआ और मां गायत्री की कृप से उन्होंने अपने प्रत्येक मुख से गायत्री की कृपा से गायत्री मंत्र की व्याख्या की। माना जाता है कि हिन्दू धर्म की नींव कहे जाने वाले चारों वेद इसी गायत्री मंत्र की व्याख्या है जो परमपिता ब्रह्मा ने की थी। माना जाता है कि गायत्री मंत्र पहले सिर्फ देवताओं तक ही सीमित था लेकिन जिस प्रकार भागीरथ ने गंगा को धरती पर लाकर लोगों के तन और मन को पवित्र करने का कार्य किया वैसे ही ऋषि विश्वामित्र ने गायत्री मंत्र को आम लोगों तक पहुंचाकर लोगों की आत्मा को शुद्ध करने का कार्य किया। माना जाता है कि गायत्री माता सूर्य मंडल में निवास करती हैं। जिन लोगों की कुंडली में सूर्य से संबंधित कोई भी दोष हो, वे गायत्री मंत्र का जाप कर सकते हैं।

गायत्री मंत्र का अर्थ– किसी भी मंत्र की तरह गायत्री मंत्र भी अपनी ध्वन्यात्मकता के माध्यम से आपके शरीर, मन और आत्मा को पवित्र करता है। गायत्री मंत्र के 24 अक्षर साधकों की 24 शक्तियों को जागृत करने का कार्य करते हैं । इस मंत्र के शब्दों के साथ विभिन्न प्रकार की सफलताएं, सिद्धियां और सम्पन्नता

जैसे गुण जुड़े हैं।

गायत्री मंत्र- ऊँ भूर् भुवः स्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्।।

गयत्री मंत्र का हिन्दी में अर्थ - उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, सुखस्वरूप परमात्मा को हम अपनी अन्तरात्मा में धारण करें । वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

माँ गायत्री पूजा विधि - माता गायत्री की उपासना कभी भी और किसी भी स्थिति में की जा सकती है। मां गायत्री की पूजा को हर स्थिति में लाभदायी माना जाता है, लेकिन विधिपूर्वक, निःस्वार्थ और भावनाओं के कम से कम कर्मकाण्डों के साथ की गयी गायत्री पूजा को अति लाभदायी माना गया है। सुबह अपने दैनिक कार्यो से निवृत्त होकर किसी निश्चित स्थान और निश्चित समय पर सुखासन की स्थिति में बैठकर नियमित रूप से मां गायत्री की उपासना की जानी चाहिए। इसी के साथ कम से कम तीन मात्रा गायत्री मंत्र का जप भी करना चाहिए। मां गायत्री की उपासना की विधि इस प्रकार है-

- सबसे पहले पंचकर्म इसके माध्यम से अपने शरीर को पवित्र बनाएं।

- पंचकर्मो में पवित्रीकरण, आचमन, शिखा वंदन, प्राणयाम और न्यास शामिल है।

- फिर देवी पूजन के लिए मां गायत्री की प्रतिमा या चित्र के सामने बैठें, मां गायत्री को सच्चे मन से याद करें और उन्हें उस चित्र या प्रतिमा में अवतरित मानें।

- फिर विधिविधान के साथ मां को जल, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप और नैवेद्य अपर्ण करें।

- इसके बाद अपनी अंतरआत्मा से मां का ध्यान करें और गायत्री मंत्र की तनी माला या कम से कम 15 मिनट तक मंत्र उच्चारण करें। ध्यान रहे मंत्र उच्चारण के समय आपके होठ हिलते रहें, लेकिन आपकी आवाज इतनी मंद होनी चाहिए कि पास बैठे व्यक्ति को भी सुनाई न दे। ❑

'उत्कर्ष' के उत्कृष्ट कार्य

सेवा भारती एवं नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन (एन एम ओ) द्वारा संचालित श्रद्धानंद मार्ग पर एक साप्ताहिक डिस्पेंसरी है। श्रद्धानंद मार्ग को ज्यादातर लोग जी बी रोड के नाम से जानते हैं। यह नाम सुनकर हम वहां की चर्चा करते कतराते हैं, बचते हैं। लेकिन यह एक ऐसी दुनिया है जहां अच्छे-भले घरों की बेटियां जाने-अंजाने, धोखे से, काम के लालच से बहकाकर फुसलाकर, जोर जबरदस्ती से लाई जाती हैं और सदा के लिए इस नर्क का हिस्सा बन जाती हैं जिसका नाम तक लेना लोग शर्म मानते हैं। यहां पहुंचाई बहनों को काम के नाम पर अपनी देह का व्यापार करना पड़ता हैं। 2020 कोरोना के दिनों में इस स्थान पर सेवा भारती दिल्ली के कार्यकर्ताओं का जाना हुआ उनको राशन रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने हेतु। तभी से विचार बना इनके लिए कुछ करने का। ध्यान आया कि ये अनेक बीमारियों की शिकार होती हैं, लेकिन अपनी पहचान छुपाने के कारण या शर्म के कारण या पैसे के अभाव में डॉक्टर तक नहीं पहुंच पाती हैं। इसलिए इस डिस्पेंसरी को शुरू किया गया। पहली जनवरी 2023 को शुरुआत हुई। अलग-अलग अस्पताल से अनेक सेवा भावी चिकित्सको का सहयोग मिलता रहा। कुछ मेडिकल कॉलेज के छात्र-छात्राएं सेवाएं दे रहे हैं। सर गंगाराम अस्पताल का हमें शुरुआत से ही सहयोग मिलना शुरू हुआ। इसी क्रम में औपचारिक रूप से यहां गाइनी डिपार्टमेंट का शुभारंभ 21 मई रविवार को किया गया। इस मौके पर सर गंगाराम अस्पताल की एचओडी (ऑब्सट्रेटिकस और गयनकलोजी) डॉ कवल गुजराल, डॉ सुधीर चड्ढा (यूरोलॉजिस्ट), डॉ अश्वनी मेहता (कार्डियोलॉजिस्ट) रहे। डॉ अश्वनी जी अरोग्य भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष हैं। सेवा भारती दिल्ली प्रांत महामंत्री श्रीमान सुशील जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत गीत 'देश हमें देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें' से हुई। माननीय अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। अन्त में वन्देमातरम हुआ। एक अच्छी शुरुआत हुई। ❐

- डॉ. संगीता त्यागी

वैष्णो देवी मंदिर का इतिहास और कथा

■ प्रतिनिधि

वैष्णो देवी का विश्व प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिर भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में कटरा नगर के समीप की पहाड़ियों पर स्थित है। इन पहाड़ियों को त्रिकुटा पहाड़ी कहते हैं। यहीं पर लगभग 5,200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है माता‌रानी का मंदिर। यह भारत में तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर के बाद दूसरा सर्वाधिक देखा जाने वाला तीर्थ स्थल है।

मंदिर परिचय

त्रिकुटा की पहाड़ियों पर स्थित एक गुफा में माता वैष्णो देवी की स्वयंभू तीन मूर्तियां हैं। देवी काली (दाएं), सरस्वती (बाएं) और लक्ष्मी (मध्य), पिण्डी के रूप में गुफा में विराजित हैं। इन तीनों पिण्डियों के सम्मिलित रूप को वैष्णो देवी माता कहा जाता है। इस स्थान को माता का भवन कहा जाता है। पवित्र गुफा की लंबाई 98 फीट है। इस गुफा में एक बड़ा चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे पर माता का आसन है जहां देवी त्रिकुटा अपनी माताओं के साथ विराजमान रहती हैं। भवन वह स्थान है जहां माता ने भैरवनाथ का वध किया था। प्राचीन गुफा के समक्ष भैरों का शरीर मौजूद है और उसका सिर उड़कर तीन किलोमीटर दूर भैरो घाटी में चला गया और शरीर यहां रह गया। जिस स्थान पर सिर गिरा, आज उस स्थान को भैरोनाथ के मंदिर के नाम से जाना जाता है। कटरा से ही वैष्णो देवी की पैदल चढ़ाई शुरू होती है जो भवन तक करीब 13 किलोमीटर और भैरों मंदिर तक 14.5 किलोमीटर है।

मंदिर की पौराणिक कथा

मंदिर के संबंध में कई तरह की कथाएं प्रचलित हैं। एक बार त्रिकुटा की पहाड़ी पर एक सुन्दर कन्या को देखकर भैरवनाथ उससे पकड़ने के लिए दौड़े। तब वह कन्या वायु रूप में बदलकर त्रिकूटा पर्वत की ओर उड़ चलीं। भैरवनाथ भी उनके पीछे भागे। माना जाता है कि तभी मां की रक्षा के लिए वहां पवनपुत्र हनुमान पहुंच गए। हनुमान जी को प्यास लगने पर माता ने उनके आग्रह पर धनुष से पहाड़ पर वाण चलाकर एक जलधारा निकाली और उस जल में अपने केश धोए। फिर वहीं एक गुफा में प्रवेश कर माता ने नौ माह तक तपस्या की।

हनुमान जी ने पहरा दिया। फिर भैरव नाथ वहां आ ध मके। उस दौरान एक साधु ने भैरवनाथ से कहा कि तू जिसे एक कन्या समझ रहा है, वह आदिशक्ति जगदम्बा हैं, इसलिए उस महाशक्ति का पीछा छोड़ दे। भैरवनाथ ने साधु की बात नहीं मानी। तब माता गुफा की दूसरी ओर से मार्ग बनाकर बाहर निकल गई। यह गुफा आज भी अर्धकुमारी या आदिकुमारी या गर्भजून के नाम से प्रसिद्ध है। अर्धकुमारी के पहले माता की चरण पादुका भी है। यह वह स्थान है, जहां माता ने भागते-भागते मुड़कर भैरवनाथ को देखा था। अंत में गुफा से बाहर निकल कर कन्या ने देवी का रूप धारण किया और भैरवनाथ को वापस जाने कां कह कर फिर से गुफा में चली गई लेकिन भैरवनाथ नहीं माने और गुफा में प्रवेश करने लगे। यह देखकर माता की गुफा पर पहरा दे रहे हनुामान जी ने उन्हें युद्ध के लिए ललकारा और दोनों का युद्ध हुआ। युद्ध का कोई अंत नहीं देखकर माता वैष्ण ावी ने महाकाली का रूप लेकर भैरवनाथ का वध कर दिया। कहा जाता है कि अपने वध के बाद भैरवनाथ को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ और उन्होंने मां से क्षमादान की भीख मांगी। माता वैष्णो देवी जानती थीं कि उन पर हमला करने के पीछे भैरव की प्रमुख मंशा मोक्ष प्राप्त करने की थी। तब उनहोंने न केवल भैरव को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति दी, बल्कि उन्हें वरदान देते हुए कहा कि मेरे दर्शन तब तक पूरे नहीं माने जाएंगे, जब तक कोई भक्त, मेरे बाद तुम्हारे दर्शन नहीं करेगा ।

मंदिर की कथा

उपरोक्त कथा को वैष्णो देवी के भक्त श्रीधर से जोड़कर भी देखा जाता है। 700 वर्ष से भी अधिक समय पहले कटरा से कुछ दूरी पर स्थित हंसाली गांव में मां वैष्णवी के परम भक्त श्रीधर रहते थे । वे निसंतान और गरीब थे। लेकिन वे सोचा करते थे कि एक दिन वे माता का भंडारा दखेंगे। एक दिन श्रीधर ने आस-पास के सभी गांव वालों को प्रसाद ग्रहण करने का न्योता दिया और भंडारे वाले दिन श्रीधर अनुरोध करते हुए सभी के घर बारी-बारी गए ताकि उन्हें खाना बनाने की सामग्री मिले और वह खाना बनाकर मेहमानों को भंडारे वाले दिन खिला सके। जितने लोगों ने उनकी मदद की वह काफी नहीं थी, क्योंकि मेहमान बहुत ज्यादा थे। वह सोच रहे थे इतने कम सामान के साथ भंडारा कैसे होगा। भंडारे के एक दिन पहले श्रीधर एक पल के लिए भी सो नहीं पा रहे थे यह सोचकर कि वह मेहमानों को भोजन कैसे करा सकेंगे। वह सुबह तक समस्याओं से घिरे हुए थे और बस उसे अब देवी मां से ही आस थी। वह अपनी झोपड़ी के बाहर पूजा के लिए बैठ गए, दोपहर तक मेहमान आना शुरू हो गए थे, श्रीधर की छोटी सी कुटिया के बाहर बैठ गए। श्रीधर ने अपनी आंखें खोलीं और सोचा कि इन सभी को भोजन कैसे कराएंगे, तब उसने एक छोटी लड़की को झोपड़ी से बाहर आते हुए देखा जिसका नाम वैष्णवी था।

वह भगवान की कृपा से आई थी, वह सभी को स्वादिष्ट भोजन परोस रही थी, भंडारा बहुत अच्छी तरह से संपन्न हो गया। भंडारे के बाद, श्रीधर उस छोटी लड़की वैष्णवी के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे, पर वैष्णवी गायब हो गई और उसके बाद किसी को नहीं दिखी। बहुत दिनों के बाद श्रीधर को उस छोटी लड़की का सपना आया उसमें स्पष्ट हुआ कि वह मां वैष्णो देवी थीं। माता रानी के रूप में आई लड़की ने उसे गुफा के बारे में बताया और चार बेटों के वरदान के साथ उसे आशीर्वाद दिया। श्रीधर एक बार फिर खुश हो गए और मां की गुफा की तलाश में निकल पड़े और कुछ दिनों बाद उन्हें वह गुफा मिल गई। तभी से वहां पर माता के दर्शन के लिए श्रद्धालु जाने लगे। ❐

इंदौर में मातृछाया कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग

■ प्रतिनिधि

राष्ट्रीय सेवा भारती द्वारा देश भर में संचालित प्रकल्प मातृछाया शिशुगृह के कार्यकर्ताओं का दो दिन का सामूहिक प्रशिक्षण वर्ग 10-11 जून 2023 को इन्दौर के श्री अग्रसेन महासभा भवन बायपास रोड, इन्दौर में सफलता से आयोजित हुआ। इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग में पूरे देश की मातृछाया शिशुगृहों से 15 प्रांत के कुल 66 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। बहनों की संख्या 17 तथा भाइयां की संख्या 49 रही। इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता श्री विजय जी पुराणिक (संयुक्त महामंत्री, राष्ट्रीय सेवा भारती) द्वारा बताया गया कि इस कार्यकर्ता प्रशिक्षण के द्वारा सभी मातृछाया, शिशुगृहों का संकलन, समन्वय और बच्चों के कल्याण के क्षेत्र में चहुंमुखी विकास करना है। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति की संकल्पना से विकसित हुआ नाम 'मातृछाया' है। इस प्रशिक्षण वर्ग की अध्यक्षता श्री अजय जी सतवानी (आदर्श ग्राम विकास एवं समाज सेविका) ने मातृछाया शिशुगृह इंदौर की व्यवस्था एवं संचालन की सराहना की।

इस अवसर पर श्री अनुराग जी पाण्डे (मध्य प्रदेश राज्य बाल संरक्षण आयोग) भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। आपका योगदान सराहनीय रहा। अनुदान (PFMS) का विषय श्री नवल किशोर जी तथा आशीष जी द्वारा च्च्ज् सहयोग से लिया गया। डॉ. मयंक जी सक्सेना (PGP, IIM, Indore) द्वारा Branding, Crowd Management, RR skills, Networking, social influence, social assets, Digital Touch points, celebrity endorsement आदि पर विस्तार से PPT द्वारा हर विषय समझाया गया। श्री नंद्रेश जी निगम (Deputy Director, Inter-county NOC, IT, & CARINGS- CARA) विशेष आमंत्रित थे। आपने PPT द्वारा संस्कार, करनी तथा कथनी, आदि विषयों पर बौद्धिक चर्चा की। आपने विस्तार से बताया कि दत्तक ग्रहण समारोह से पहले, समारोह में और बाद में किन-किन बातों का ध्यान रखना है और क्यूं रखना है। सफलताओं का माप, Sharing to Co learning आदि विषयों पर चर्चा समीक्षा हुई। बालनीति का बोर्ड लगाना, वर्ग की जानकारी अपने प्रकल्प पर बैठक में सभी को सांझा करना, Internal Audit, Intership की योजना बनाना आदि। इन विषयों पर भी श्री विजय जी पुराणिक ने सबके सामने बातचीत रखी।

बौद्धिक समापन सत्र में श्री प्रदीप जी खनडेकर ने कुशलता, गुणवत्ता, अपनत्व, me and my products, me and my company आदि से कैसे अपने कार्य की

उत्कृष्टता में उन्नति लायी जाये, कार्यों की सूची बनायें, कितने समय में करना है, निर्धारित करें इन विषयों पर प्रकाश डाला। दो दिनों का यह समय 8 सत्रों में विधि पूर्वक सफलता से संपन्न हुआ। इस वर्ग में अनेक सत्रों में PPT द्वारा श्री अनुराग जी, डॉ. कृपा शंकर जी, श्री प्रदीप सक्सेना जी, द्वारा जानकारी प्रदान की गई। सभी कार्यकर्ताओं ने चर्चा में सकारात्मकता से भाग लिया। कुल मिला कर इस प्रशिक्षण वर्ग से सभी कार्यकर्ताओं में आपसी मेल-जोल, सहयोग से सामूहिक रूप से लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे, ऐसा बहुत ही प्रयास सफल किया गया।

हमारी संस्कृति ही हमारी पहचान है

मातृछाया एक अत्यंत मार्मिक प्रकल्प होते हुए समाज का अभिन्न प्रकल्प है। हम कार्यकर्ताओं को इस प्रकल्प में प्रशासनिक नियमों का हर स्तर पर पालन करते हुए हर बच्चे को माता-पिता से जोड़ कर दत्तक ग्रहण परंपरा को गति देनी है। यह मेरी स्वयं से तथा समाज से एक दृढ़ प्रतिबद्धता है।

मातृछाया कार्यकर्ता वर्ग, इंदौर	वृत्त
मातृछाया है ऐसे प्रांत	13
उपस्थित रहे प्रांत	12
कुल मातृछाया	28
उपस्थित मातृछाया	26
मातृछाया नहीं है और उपस्थित रहे ऐसे स्थान	3
कार्यकर्ता उपस्थिति संख्या :	महिला-20, पुरुष-46 कुल-66

अखिल भारतीय मातृछाया कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग इंदौर में दिल्ली प्रांत के मातृछाया यूनिट-1 (पहाड़गंज) से श्री राकेश जी तथा बहन सुनीता जी, यूनिट-2 (मियाँवाली) से श्री प्रेम सागर जी तथा श्री राकेश जी कथूरिया एवं प्रांत से प्रभारी डॉ. संजय जिन्दल जी पूरे समय उपस्थित रहे।

बता दें कि मातृछाया शिशु गृह के माध्यम से 0-6 वर्ष के नवजात, निराश्रित, परित्यक्त, अनाथ (स्वनाथ) शिशुओं का पालन-पोषण कर उन्हें दम्पत्तियों को कानूनी प्रक्रियाओं के माध्यम से गोद दिया जाता है। ❐

देश कभी नहीं भूल सकता डॉ. मुखर्जी को

■ संस्कृति

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई, 1901 को कलकत्ता में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री आशुतोष मुखर्जी तथा माता का नाम योगमाया देवी था। आशुतोष मुखर्जी की प्रतिभा विलक्षण थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय के निर्माता के रूप में जो प्रतिष्ठा उन्होंने अर्जित की वह अतुलनीय है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अपने मेधावी एवम् कर्मठ पिता आशुतोष मुखर्जी से विरासत में विद्वता, संस्कृति निष्ठा, निर्भीकता, देशभक्ति एवम् प्रशासनिक पटुता प्राप्त हुई थी। माता-पिता ने अपने प्रिय पुत्र को अपने प्रिय आदर्शो में ढालने का पूर्ण प्रयास किया।

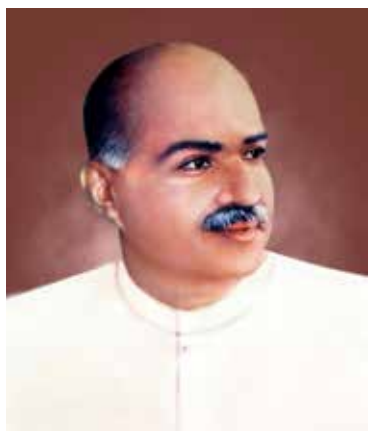

पिता की प्रतिभा सुयोग्य पुत्र में निरंतर प्रकट होती गई। श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बी.ए. ऑनर्स अंग्रेजी साहित्य में कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में पास किया। लेकिन मातृभाषा के प्रति प्रेम और श्रद्धा रखते हुए उन्होंने एम. ए. बंगला भाषा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेक उत्तीर्ण किया। इसके बाद इंग्लैण्ड से बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की और भारत लौटकर कलकता हाईकोर्ट में वकालत प्रारंभ की ।

1922 में उनका विवाह श्रीमती सुधा देवी से हुआ। उनका दाम्पत्य जीवन बड़ा अल्पकालिक था। 1936 में उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां थीं। सन् 1934 में मात्र 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बनाए गए। दो वर्ष कुलपति रहने के बाद 1936 में पुनः दो वर्ष के लिए उन्होंने यह पद संभाला। इस अवधि में उन्होंने विश्वविद्यालय शिक्षण में अनेक उपयोगी योजनाएं प्रारंभ कीं। बंगला भाषा को कॉलेज शिक्षा का माध्यम बनाया, बंग भाषा का शब्द कोष बनवाया, बी.ए. परीक्षा में बंगला के साथ-साथ हिन्दी की पढ़ाई प्रारंभ की, सैनिक शिक्षा आरंभ की, चीन और तिब्बती भाषाओं का पठन-पाठन आरंभ किया तथा अध्यापकों के विशेष प्रशिक्षण आदि की भी अनेक योजनाएं हाथ में लीं।

1938 में उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। उस समय चारों ओर उपद्रव और आतंक का माहौल था। 1940 में उन्होंने बंगाल में फजलूल हक के मंत्रिमंडल में अर्थमंत्री का पद संभाला। वे अत्यंत सहृदयी व्यक्ति थे। 1942 में बंगाल में आए समुद्री तूफान और 1943 में भीषण अकाल से आई त्रासदी में वे पीड़ितों की सहायता के लिए तन-मन-धन से जुट गए। सरकार की विपरीत नीतियों के विरोध में इन्हें मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देना पड़ा।

15 अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। श्यामा प्रसाद मुखर्जी वाणिज्य मंत्री बने। सन् 1950 तक उन्होंने रेलवे इंजनों के निर्माण का कारखाना चित्तरंजन, खाद बनाने का कारखाना सिन्दरी, जलयान बनाने का कारखाना विशाखापट्टनम तथा वायुयान बनाने का कारखाना बंगलौर में प्रारंभ करके अपूर्व यश अर्जित किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से वे अत्यधिक प्रभावित थे। मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देने के बाद संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरुजी से उन्होंने देश की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया और 1951 में संघ के कुछ कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना की। 1952 में वे जनसंघ के टिकट पर जीत कर संसद में पहुंचे। वे विपक्ष का योग्यतम एवं प्रबलतम प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व संसद में करते थे।

23 जून को वे भारत की एकता एवं अखण्डता की बलिवेदी पर हुतात्मा हो गये। उनकी शवयात्रा में लाखों लोग शामिल हुए। देश डॉ. मुखर्जी को सदा याद करेगा। ❐

हमारी नई संसद

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 मई, 2023 रविवार को भव्य समारोह में नवनिर्मित संसद भवन देश को समर्पित कर दिया। नया भवन विकसित भारत के संकल्पों को पूरा होते देखेगा। इस भवन में अपनी विरासत, इतिहास, वास्तु, संस्कृति, संविधान, कला, कौशल के स्वर स्पष्ट झलकते हैं।

तमिलनाडु के पुजारियों के आशीर्वाद और वैदिक मंत्रों के अनुष्ठान के पश्चात् श्री मोदी जी ने पवित्र सेंगोल (राजदण्ड) को साष्टांग प्रणाम किया। यह राजदण्ड सेवा पथ, कर्तव्य पथ और राष्ट्र पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहेगा। यह सेंगोल लोक सभा के अध्यक्ष के आसन के दाई ओर स्थापित किया गया है, जो शक्ति, सेवा, न्याय का प्रतीक है।

मकर और हंस के प्रतीक चिन्ह जल को नमन, शार्दूल और गरूर के प्रतीक चिन्ह नभ को नमन तथा अश्व और गज के प्रतीक चिन्ह थल को नमन करते हुए दर्शाया गया है।

ढाई साल के कम समय में बनी हुई यह संसद तैयार हो सकी है । त्रिकोणीय छत से सूर्य की किरणें पूरे भवन में फैलती हैं। भवन में ऑटोमैटिक कैमरा है।

दोनों सदनों में जनता के लिए विशाल दीर्घा, सुविधापूर्ण हैं। सदनों में डिजीटल उपकरण लगे हैं, जिसमें कई भाषाओं में कार्यवाही सुनी और पढ़ी जा सकती है। सदस्यों के लिए बायोमैट्रिक की सुविधाएं उपलब्ध हैं। सदन पेपर लैस हैं। वोटिंग के लिए और परिणाम जानने के लिए विशाल मल्टीमीडिया डिस्पले लगाया गया है।

संसद के उद्घाटन अवसर पर केन्द्र सरकार ने 75 रुपए का खास सिक्का जारी किया है। यह सिक्का चांदी, तांबा, निकेल और जिंक धातुओं से निर्मित है।

यह संसद भवन 64500 वर्ग मीटर के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें तीन द्वार - ज्ञान द्वार, शक्ति द्वार और कर्म द्वार हैं।

लोकसभा कक्ष में 888 सांसदों और राज्यसभा में 384 सांसदों के बैठने की व्यवस्था है। लोकसभा भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर की थीम पर और राज्यसभा भारत के राष्ट्रीय फूल कमल की थीम पर आधारित है। दर्शकों के लिए 6 गैलेरी बनाई गई हैं। गैलेरी में 10-10 सीटों की सात पंक्तियां हैं।

राजस्थान से लाए गए ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर, महाराष्ट्र से आई सागोन की लकड़ी, भदोई-मिर्जापुर के कालीन, त्रिपुरा के बाँस से बने फर्श, दोनों सदनों के लिए फाल्स सीलिंग हेतु स्टील की संरचना दमन व द्वीप से लाए गए हैं। फर्नीचर मुम्बई में तैयार किया गया है। भवन में पत्थर पर लगाई जाने वाली जाली, राजस्थान के राज नगर और उत्तर प्रदेश के नोएडा से लाकर सुसज्जित किया गया है। ❐

तिलक ऐसे बने लोकमान्य

■ धनंजय धीरज

भारतीय समाज में राष्ट्रभक्ति और जनजागरण का कार्य तिलक जी ने जीवन-पर्यन्त किया। उन्होंने जनता में स्वाभिमान, आत्मविश्वास और राष्ट्रप्रेम जगाया। वे इतने लोकप्रिय हुए कि जनता ने उन्हें लोकमान्य की उपाधि दी। लोकमान्य तिलक कहते थे, ''स्वतंत्रता भीख में नहीं मिलती वह तो लेनी पड़ती है।'' ''स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है वह हम लेकर रहेंगे।'' लोकमान्य का जन्म 23 जुलाई, 1853 को रत्नागिरी में हुआ। बालक बहुत ही कुशाग्र बुद्धि का था। उनकी काकी ने जब उनको कहा कि तिलक तुम अपनी स्लेट स्कूल ले जाना भूल गये हो तो उनका उत्तर था कि इसकी जरूरत नहीं है सवाल तो मैं जबानी ही कर सकता हूं।

तिलक मेधावी तो थे ही पर वे सत्यवादी और निर्भीक भी थे। एक बार बच्चे कक्षा में मूंगफली खा रहे थे। इतने में उनके अध्यापक आये। अध्यापक ने जब चारों ओर नजर डाली तो कक्षा में छिलके बिखरे पड़े थे। उन्होंने कहा कि तुम को स्वयं पर लज्जा आनी चाहिए। बच्चों ने सिर झुका लिया। अध्यापक का गुस्सा शांत हो गया और उन्होंने बच्चों को कचरा साफ करने के लिए कहा परंतु तिलक स्थिर बैठे रहे। जब अध्यापक ने इनको सफाई करने के लिए कहा तो उन्होंने कहा कि जब मैंने गंदगी डाली ही नहीं तो सफाई क्यों करूं! यह कहते हुए वह कक्षा से बाहर निकल गये। कॉलेज में प्रवेश लेने पर उन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ व्यायाम पर भी बल दिया। उनका मानना था कि देश सेवा के लिए एक सबल शरीर की भी जरूरत है। उन्होंने पुस्तकें और व्यायाम में संतुलन बनाया और गणित में उन्होंने ख्याति अर्जित की और विद्वान प्रो. छेत्र ने स्वयं उनका सम्मान किया। साथी विद्यार्थियों में उनकी बड़ी इज्जत थी।

तिलक जी का मानना था कि लोगों को शिक्षित और जागृत किए बिना समाज सुधार संभव नहीं है। इसी उद्देश्य से उन्होंने एक पाठशाला खोली जिसमें संस्कार देने की समुचित व्यवस्था थी। फिर उन्होंने बड़ी आयु के लोगों में जागरण के लिए 'केसरी' मराठी भाषा में और 'मराठा' समाचार का प्रकाशन अंग्रेजी भाषा में शुरू किया। उनके तर्कसंगत और बेबाक लेखों से अंग्रेज सरकार बौखला गई।

जनता में जागृति पैदा करने के लिए उन्होंने गणेशोत्सव और शिवाजी जयंती मनानी प्रारंभ की। उनका कहना था कि शिवाजी को अपनी स्वतंत्रता और अपना देश प्यारा था वे स्वाभिमानी, साहसी और शूरवीर थे। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। लगभग उन्हीं दिनों सरकार ने भारतीय कपड़ों पर 'कर' लगा दिया ताकि ब्रिटेन से आने वाला कपड़ा ज्यादा बिक सके। तिलक जी ने इसके विरोध में आवाज उठाई और विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का आवाहन किया और स्वदेशी खरीदने के लिए प्रेरणा दी।

एक बार महाराष्ट्र में अकाल पड़ा तो तिलक जी ने स्वयंसेवकों को गांव-गांव भेजकर किसानों को जमीन जायदाद बेचकर 'कर' चुकाने के लिए मना किया और उल्टा सरकार से अनाज और चारे की मांग की। सरकार ने मदद करने की बजाय स्वयंसेवकों को गिरफ्तार कर लिया।

तिलक किसानों को अकाल से राहत दिलाने के काम में जुटे थे कि पुणे में प्लेग फैल गया। सरकार ने प्लेग को रोकने के लिए पहले तो कुछ किया नहीं उल्टे चक्र और चला दिया। तिलक जी ने पुणे के दुखी लोगों के साथ क्रूर व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने अंग्रेजी 'मराठा' में लिखा प्लेग से ज्यादा घातक यह अंग्रेजों की महामारी है जो इस समय नगर पर छाई हुई है। तिलक ने आतंकग्रस्त लोगों के लिए अपनी ओर से एक अलग

कैम्प स्थापित किया और गरीबों के लिए मुफ्त रसोई का भी इंतजाम किया । धीरे-धीरे स्थिति सामान्य हुई पर लोगों के घाव नहीं भरे। एक युवा दामोदर चाफेकर ने प्लेग कमिश्नर रैण्ड पर गोली चलायी जिससे वह मारा गया। तिलक जी पर राजद्रोह भड़काने का मुकदमा चलाया गया और उठारह महीने के लिए जेल भेज दिया गया।

जुलाई 1905 में बंगाल के विभाजन की घोषणा की गई और अक्टूबर 1905 में यह लागू हो गया। बंगाल की तरह सारे देश में इसके विरुद्ध आंदोलन खड़ा हो गया। पुणे में भी विदेशी माल का बहिष्कार किया गया और विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। तिलक की ही तरह पंजाब में लाला लाजपत राय और बंगाल में अरविन्द घोष भी स्वराज्य को अंतिम ध्येय मानते थे। इन सबको नेशनलिस्ट कहा जाने लगा । सरकार ने नेशनलिस्टों को रोकने के असफल प्रयास किए। लाला लाजपत राय को वर्मा के मांडले जेल में भेज दिया गया और लोकमान्य को केसरी में एक लेख लिखने पर गिरफ्तार करके राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। उन्होंने अंग्रेजों के न्याय पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया। तिलक को 6 वर्ष के लिए देश निकाले की सजा हुई और उनको भी मांडले जेल भेज दिया गया। जून, 1914 में तिलक भारत वापस आए। अपनी सरकार खुद बनाने और जनता के अधिकार और होमरूल के सवाल को तिलक जी ने उठाया । तिलक को सारे भारत में पूजा जाने लगा। बाद में होमरूल की मांग को लेकर तिलक इंग्लैण्ड भी गये पर भारत लौट कर सन् 1920 में तिलक जी का निधन हो गया। पर तिलक जी ने जो जागृति पैदा की उसको असंख्य देशवासियों ने स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाया। ❐

पाप और पुण्य

गाँव के बीच शिव मन्दिर में एक संन्यासी रहा करते थे। मंदिर के ठीक सामने ही एक वेश्या का मकान था। वेश्या के यहाँ रातदिन लोग आतेजाते रहते थे। यह देखकर संन्यासी मन ही मन कुड़ुकुड़ाया करता था। एक दिन वह अपने को नहीं रोक सका और उस वेश्या को बुला भेजा। उसके आते ही फटकारते हुए कहा- ''तुझे लाज नहीं आती पापिन, दिन रात पाप करती रहती है। मरने पर तेरी क्या गति होगी?" संन्यासी की बात सुनकर वेश्या को बड़ा दु:ख हुआ। वह मन ही मन पश्चाताप करती भगवान शिव से प्रार्थना करती अपने पाप कर्मों के लिए क्षमा याचना करती। बेचारी कुछ जानती नहीं थी। बेबस उसे पेट के लिए वेश्यावृत्ति करनी पड़ती किन्तु दिन रात पश्चाताप और ईश्वर से क्षमा याचना करती रहती। उस संन्यासी ने यह हिसाब लगाने के लिए कि उसके यहाँ कितने लोग आते हैं एक-एक पत्थर गिनकर रखने शुरू कर दिये। जब कोई आता एक पत्थर उठाकर रख देता। इस प्रकार पत्थरों का बड़ा भारी ढेर लग गया तो संन्यासी ने एक दिन फिर उस वेश्या को बुलाया और कहा "पापिन? देख तेरे पापों का ढेर? यमराज के यहाँ तेरी क्या गति होगी, अब तो पाप छोड़।'' पत्थरों का ढेर देखकर अब तो वेश्या काँप गई और भगवान शिव से क्षमा माँगते हुए रोने लगी। अपनी मुक्ति के लिए उसने वह पाप कर्म छोड़ दिया। कुछ जानती नहीं थी न किसी तरह से कमा सकती थी। कुछ दिनों में भूखी रहते हुए कष्ट झेलते हुए वह मर गई। उधर वह संन्यासी भी उसी समय मरा। यमदूत उस संन्यासी को लेने आये और वेश्या को विष्णु दूत। तब संन्यासी ने बिगड़कर कहा- "तुम कैसे भूलते हो। जानते नहीं हो मुझे विष्णु दूत लेने आये हैं और इस पापिन को यमदूत। मैंने कितनी तपस्या की है भजन किया है, जानते नहीं हो।"

यमदूत बोले- "हम भूलते नहीं, सही है। वह वेश्या पापिन नहीं है पापी तुम हो। उसने तो अपने पाप का बोध होते ही पश्चाताप करके सच्चे हृदय से भगवान से क्षमा याचना करके अपने पाप धो डाले। अब वह मुक्ति की अधिकारिणी है और तुमने सारा जीवन दूसरे के पापों का हिसाब लगाने की पाप वृत्ति में, पाप भावना में जप तप छोड़ छाड़ दिए और पापों का अर्जन किया। भगवान के यहाँ मनुष्य की भावना के अनुसार न्याय होता है। बाहरी दिखावे या दूसरों को उपदेश देने से नहीं। परनिन्दा, छिद्रान्वेषण, दूसरे के पापों को देखना उनका हिसाब करना, दोष दृष्टि रखना अपने मन को मलीन बनाना ही तो है।'' ❐

नशा मुक्ति का संकल्प

■ संगीता गुप्ता

अनिता के पति अनिरुद्ध धुँआधार धूम्रपान (चेन स्मोकर) करते थे। उन्हें कुछ वर्षो से धूम्रपान और शराब की लत लग चुकी थी। शरीर और दिमाग कुछ समय, घण्टे, आधे घण्टे के अन्दर ही स्मोकिंग के लिए विवश करता रहता।

एक दिन उनका बेटा 'मनोज' जो कि 9वीं कक्षा का विद्यार्थी था। उनके स्कूल में नशा मुक्ति केन्द्र से कुछ स्वयंसेवक (वोलंटियर) आए। स्कूल के सभी विद्यार्थियों को प्रार्थना हॉल में एकत्र करके इस विषय पर गहराई से बताया गया। जिसमें नशे की लत पड़ जाने व्यक्ति के लक्षण, नशे से होने वाले नुकसान तथा ऐसे कई घरों की आप बीती कहानियाँ डॉक्यूमेंट्री के रूप में दिखाई गई, जिन्होंने नशें की लत के कारण अपने प्रियजनों को अपनी ही सामने मरते, शारीरिक और मानसिक कष्ट झेलते देखा था। उसी डॉक्यूमेंट्री में एक कहानी 'अंकुश' की भी थी।

मैं आपको खो नहीं सकता पापा। मैं आपके बिना नहीं रह पाऊँगा। अनिरूद्ध भी बहुत भावुक हो गया और अपने बेटे से वायदा किया-बेटा! आज से मैं कभी भी नशा नहीं करूँगा। कभी भी नहीं। चलो अब डिनर कर लेते है, खाना ठण्डा हो रहा होगा। जैसे ही सब डिनर टेबल पर गए। अनिरूद्ध ने शराब का गिलास देखा और फिर मनोज की तरफ। मुस्कुराते हुए शराब की बोतल नाली में पलट दी और गिलास का शराब भी। सिगरेट कूड़ेदान में डाल दिया। सभी मुस्कुराये और खुशी-खुशी खाना खाने लगे।

अंकुश बचपन से ही पढ़ने में बहुत होशियार था। वो हमेशा कक्षा में टॉप करता था। बावजूद इसके कि उसके माता-पिता एक मजदूर परिवार से थे। उसकी एक छोटी बहन भी थी। जिसका नाम 'वंशिका' था, जो 12 वर्ष की थी। अंकुश इस बार भी 10वीं कक्षा में प्रथम श्रेणी से पास हुआ। सारे स्कूल को उस पर गर्व था। उसके माता-पिता को भी अपना सपना साकार होता हुआ दिखाई देने लगा था। वो परमात्मा को धन्यवाद करते नहीं थकते थे।

ग्यारवीं कक्षा में उसका स्कूल बदल गया। उसके मित्र, कक्षा के सभी विद्यार्थी बदल गये। नये स्कूल के नये विद्यार्थी जिनकों अंकुश ठीक से जानता-समझता भी नहीं था। कुछ उनमें से पढ़ाई में बेहद कमजोर थे। कक्षा में हमेशा उनकों डाँट पड़ती रहती थी और अंकुश को शाबाशी मिलती।

प्रनव, दिनेश और प्रकाश अंकुश की तारीफ सुनकर उससे जलते थे। उन्हें लगता था कि इस नये लड़के के कक्षा में आने से उनको और डाँट पड़ती है और अपमान भी सहना पड़ता है। मन में ईर्ष्या और चेहरे पर मुस्कान लिए उन्होंने अंकुश से मित्रता बढ़ाई। उससे जिद्द की-भाई अंकुश हमें शाम को पढ़ा दिया करो। तुम तो बहुत होशियार हो और हम सब बुद्धु। हमारे तो दिमाग में टीचर का पढ़ाया पड़ता ही नहीं।

अंकुश ने उनकी मदद करने की सोच उनको 'हाँ' कर दिया। सबने प्रनव के घर रोज शाम को 6 बजे पढ़ने का निश्चय किया। प्रनव के घर में आया (कामवाली) ही होती थी रात नौ बजे तक। प्रनव के माता-पिता दोनों ही नौकरी करते थे, तो सुबह के निकले रात नौ बजे तक ही आते थे। परिवार में और कोई साथ नहीं रहता था तो प्रनव की दैनिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करने वाला कोई नहीं था।

शाम के छः बज चुके थे। प्रनव के घर उसके सारे दोस्त एकत्रित हो गये। अंकुश भी पहुँच गया। मगर ये क्या किसी का पढ़ाई का कोई मूड ही नही था मानो। टेबल पर शराब-बियर की बोतलें, सिगरेट, नमकीन इत्यादि

पड़े थे, और किताबे स्कूल बैग में। अंकुश को ये सब बहुत अजीब लगा, वो असुविधा महसूस करने लगा। उसने झिझकते हुए फिर भी कहा-चलो पढ़ाई करते है, फिर मुझे घर भी जाना है।

प्रनव बोला-अरे! भाई अंकुश! पढ़ लेंगें। जल्दी भी क्या है। अभी तो मौज का टाईम है भाई। तुम भी लो यार। मजे करो। अंकुश ने कई बार इंकार किया। मगर सब उससे जबरदस्ती करने लगे और बच्चा-बच्चा कहकर चिढ़ाने लगे। व्यंग कसते हुए कहने लगे-अरे! इससे ना होगा। ये तो बस किताबी कीड़ा है। जीवन की मौज-मस्ती का इसे क्या पता। ऐसा कहते और बीयर पीते फिर सिगरेट का कश लेने लगते। अंकुश को बहुत अजीब लग रहा था। अंकुश वहाँ से उठकर घर को लौट गया।

अगले दिन कक्षा में अंकुश उन तीनों से दूर बैठा और उनसे बात करनी बन्द कर दी। उन लोगों ने उसे बहुत फुसलाने और बहकाने की कोशिश की, मगर अंकुश अपने लक्ष्य से एक कदम भी नहीं भटका। धीरे-धीरे समय बीतता गया और वार्षिक परीक्षा हुई। अंकुश हर बार की तरह नये स्कूल में भी ग्यारहवीं की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास हुआ। प्रनव की तो एक विषय में कम्पार्टमेन्ट आई और दिनेश और आकाश भी सी-ग्रेड से पास कर दिये गए स्कूल वालों की उदारता के कारण।

अंकुश बारहवीं कक्षा में भी पूरी लगन से पढ़ाई में लग गया। मात्र अपने लक्ष्य पर ध्यान दे रहा था। इधर-उधर की बातों से उसने अपना सारा ध्यान हआ रखा था। बाहरवीं कक्षा में भी वो 98 प्रतिशत से पूरे स्कूल में टॉप किया। उसकी आर्थिक स्थिति और उसकी पढ़ाई में रुचि को ध्यान में रखते हुए सरकार के द्व ारा उसको छात्रवृत्ति (स्कॉलरशिप) प्राप्त हुई। जिसके फलस्वरूप उसके आई.आई.टी. की पढ़ाई के लिए विदेश भेज दिया गया।

इस बार प्रनव, दिनेश और आकाश से स्कूल ने कोई हमदर्दी नहीं दिखाई, तीनों को फेल कर दिया। इस बात का माता-पिता को पता लगने पर उनकों बहुत दुख हुआ। माता-पिता को जब तक होश आता कि उनके बच्चे किस दिशा में जा रहे हैं, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। प्रनव को नशे की बुरी लत लग चुकी थी। दिनेश और आकाश भी बिना सिगरेट, शराब के रह नहीं पाते थे।

एक दिन प्रनव को साँस लेने में बहुत तकलीफ महसूस होने के कारण अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टर की जाँच-रिर्पोट आने के बाद पता चला कि प्रनव को फेफड़ो का कैन्सर हो चुका है, जिसकी वजह डॉक्टर ने उसका अत्यधिक नशा करना बताया। माता-पिता ये बात सुनकर बेहद हैरान और दु:खी हुए, और एक-दूसरे पर चिखने चिल्लाने लगे। तेरी वजह से प्रनव का ये हाल है अगर तू नौकरी ना करती, तो ये इस तरह हाथ से ना निकल गया होता। फिर मम्मी भी कहाँ चुप रहने वाली-हाँ, हाँ, जैसे की मैंनें नौकरी करने की जिद्द की थी। ये घर और गाड़ी जो लोन पर है उसकी किस्त अकेले की नौकरी से नहीं भर पा रहे थे तभी तुमने मुझे नौकरी करने को कहा। मुझे कोई शौक नहीं था नौकरी करने का। काफी देर आपस में लड़ने के बाद दोनों ही फूट-फूटकर रोने लगे और अब से अपने बेटे का ख्याल रखने तथा देखभाल करने का निश्चय किया।

मगर कैन्सर का लास्ट स्टेज चल रहा था। प्रनव की छ: महीने बाद मृत्यु हो गई। दिनेश और आकाश को प्रनव का इस तरह तड़प-तड़प कर मरने का बहुत बड़ा सदमा लगा। वो जानते थे कि प्रनव नशे की लत के कारण मरा है, बावजूद इसके वो नशा नहीं छोड़ पा रहे थे। वो जिस दिन भी नशे से दूर रहने की कोशिश करते। उनका शरीर कॉपने लगता, जुबान लड़खड़ाने लगती। बुद्धि सुन्न पड़ जाती और कुछ सोच पाने में असर्मथ रहती और बार-बार नशे की ओर आर्कषित होती। अंतत: नशा कर लेने के बाद ही उनको सकून पड़ता।

वो दोनों प्रनव की तरह बीमारी से तड़प-तड़प कर नहीं मरना चाहते थे। अत: उन्होंने अपने माता-पिता को सब बताने का निश्चय किया। उनके माता-पिता को उनकी हालत जानकर बेहद दु:ख हुआ। उन्हें नशे से मुक्ति दिलाने वाले एक केन्द्र के बारे में पता चला। तो दोनों बच्चों को नशामुक्ति केन्द्र में भेजने का निश्चय किया। उनके माता-पिता को उनकी हालत जानकर बेहद दु:ख हुआ और उन्हें नशा से मुक्ति दिलाने वाले केन्द्र के बारे

में पता चला, तो दोनों बच्चों को वहाँ भेज दिया गया। दिनेश और प्रकाश लगभग दो वर्षों की कड़ी निगरानी और चिकित्सा से नशे की लत से सम्पूर्ण छूट पाने में सफल हुए।

उधर अंकुश अपनी आई.आई.टी की पढ़ाई कर भारत एक अच्छी नौकरी पर लगकर वापस लौट आया था। जब उसे इन सब बातों की जानकारी मिली, तो वो उस दिन की घटना को याद करने लगा, जिसदिन अगर उसने अपने मन को नियंत्रित ना रखा होता और अपने लक्ष्य की ओर से ध्यान हटा दिया होता तो आज वो भी प्रनव, दिनेश और प्रकाश में से एक होता। उसने अपने मन पर अंकुश लगाकर अपने जीवन को सार्थक किया। इसी के साथ डॉक्यूमेन्ट्रि फिल्म का समापन होता है। पूरे प्रार्थना हॉल में सन्नाटा छा गया था। सारे विद्यार्थी उन नशे के आदि विद्यार्थियों की दुर्दशा देख दु:खी थे और फिर एक आवाज पीछे से आती सुनाई दी। मनोज बोल पड़ा-मैं नशा कभी नहीं करुँगा। कभी भी नहीं। फिर और विद्यार्थियों की आवाज भी प्रार्थना हॉल में एक स्वर में गूँज पड़ी। हाँ, हम नशा कभी भी नहीं करेंगें। नशे के खिलाफ नशामुक्ति केन्द्र के कार्यकर्ताओं का प्रयास सफल होता दिखाई दे रहा था।

मनोज मन-ही-मन निश्चय करने लगा। मैं अपने पापा को भी प्रनव जैसी स्थिति में आने से बचाऊँगा, उन्हें नशें के कारण बीमार नहीं होने दूँगा। उनके नशे की लत को जरुर छुड़वाऊँगा।

मनोज घर गया तो उदास, मायूस था। उसकी आँखों के सामने बार-बार प्रनव की दुर्दशा का दुश्य आ जाता था। बार-बार यही विचार आता कि कही मेरे पापा का हाल भी ऐसा ना हो जाये। ये सब असमंजस में ही वो सारा दिन एकांत कमरे में पड़ा रहा। उसने घर आने के बाद से कुछ खाय-पिया भी नहीं। मम्मी के बार-बार पूछने पर भी कुछ नहीं बता रहा था। समय बीतते-बीतते शाम हो गई। आठ बज गए। उसके पापा भी ऑफिस से आ गये। वंदना उनकी बिटिया दौड़कर पापा के पास आई। और उनके गले लग कर उनका हालचाल पूछा और उनका ऑफिस का बैग अन्दर रखने को ले गई। मगर आज मनोज नहीं दिखाई दे रहा था। पापा हाथ-मुँह धोकर डीनर टेबल पर खाने बैठ गए। रोज की तरह अपने ड्रिंक (शराब) का ग्लास हाथ में लिया और सिगरेट की डिब्बी भी पास रख ली।

अनीता! मनोज नहीं दीख रहा। बुला लो उसको भी। खाना खा ले। अनीता ने जवाब दिया-पता नहीं क्या बात है। मनोज जब से स्कूल से वापस आया है, अपने कमरे में उदास सा बैठा है। कुछ खाया-पिया भी नहीं है सुबह से। और पूछने पर कुछ बता भी नहीं रहा है।

अनिरूद्ध मनोज के पापा उसके कमरे में गए और मनोज से उसकी उदासी की वजह जानने की कोशिश की, मगर मनोज खामोश बैठा रहा। उसकी खामोशी से सभी चिन्तित होने लगे। तभी मनोज बोल पड़ा-पापा! आप हमसे कितना प्यार करते हो? अरे! ये भी बताना पड़ेगा मेरे बच्चों? जान से भी ज्यादा प्यार करता हूँ तुम सबको। सबसे ज्यादा। तो पापा फिर आप हमारे लिए 'जी' क्यूँ नहीं सकते हो? क्यूँ मरना चाहते हो? अनिरूद्ध मनोज के पापा हैरान हो पूछने लगे-मरना? नहीं तो, किसने कहाँ ये तुमसे? हाँ पापा! फिर उसने स्कूल में हुए नशामुक्ति कार्यक्रम के बारे में और प्रनव की दुर्दशा के बारे में सभी व्यक्त किया और रोने लगा। मैं डर गया हूँ पापा। मैं नहीं चाहता कि आप भी प्रनव की तरह नशे की लत की वजह से बीमार होकर मर जाये।

मैं आपको खो नहीं सकता पापा। मैं आपके बिना नहीं रह पाऊँगा। अनिरूद्ध भी बहुत भावुक हो गया और अपने बेटे से वायदा किया-बेटा! आज से मैं कभी भी नशा नहीं करूँगा। कभी भी नहीं। चलो अब डिनर कर लेते है, खाना ठण्डा हो रहा होगा। जैसे ही सब डिनर टेबल पर गए। अनिरूद्ध ने शराब का गिलास देखा और फिर मनोज की तरफ। मुस्कुराते हुए शराब की बोतल नाली में पलट दी और गिलास का शराब भी। सिगरेट कूड़ेदान में डाल दिया। सभी मुस्कुराये और खुशी-खुशी खाना खाने लगे।

हमारा एक दृढ़ संकल्प हमारा सम्पूर्ण जीवन प्रभावित कर सकता है। ❐

हँस लो भाई

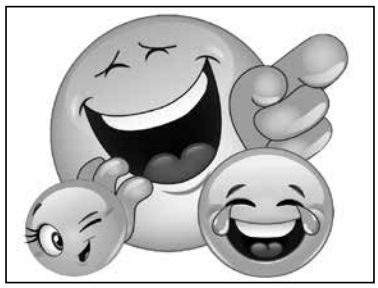

• सोनू मोनू से- यार, मेरी बीवी हमेशा साड़ियों की ही रट लगाए रहती है। परसों भी एक साड़ी लाने का बोली, फिर कल एक साड़ी के लिए बोली और आज भी साड़ी की ही फरमाइश।

मोनू- लेकिन इतनी साड़ियों का वह करती क्या है?

सोनू- पता नहीं यार, यह तो तब ही पता चलेगा, जब मैं साड़ी लाकर दूंगा।

• व अक्षर गलत होने की वजह से एक किताब की 10 लाख कापियां दो दिन में ही बिक गईं...!

दरअसल, ये गलती उस किताब के टाइटल में हो गई थी।

किताब का नाम था- 'एक आइडिया, जो आपकी लाइफ बदल दे।'

और गलती से हो गया- 'एक आइडिया, जो आपकी वाइफ बदल दे...!'

• पप्पू ने पूछा- कैसे हैं बाबाजी?

बाबाजी बोले- हम तो साधू हैं बेटा। हमारे राम हमें जैसे रखते हैं, हम वैसे ही रहते हैं। तुम तो सुखी हो ना बच्चा?

पप्पू बोला- हम तो संसारी लोग हैं, बाबाजी। हमारी सीता हमें जैसे रखती है, हम वैसे ही रहते हैं।

• पति-पत्नी सफर कर रहे थे, तभी एक भिखारी आया...

पति अभी पर्स निकाला ही रहा था कि भिखारी बोला- आपकी जोड़ी सात जन्म तक बनी रहे!

फिर क्या...

पति ने गुस्से में उसे पैसे ही नहीं दिए।

• एक दोस्त दूसरे दोस्त से...

बुलेट ट्रेन तो उन देशों के लिए बनी है, जहां लोगों के पास समय की कमी है। हमारे यहां तो अगर कहीं जेसीबी लगी हो, तो आधा गांव उसे ही देखने चला जाता है।

• एक मच्छर परेशान बैठा था। दूसरे ने पूछा- भाई, क्या हुआ तुझे?

पहला बोला- यार गजब हो रहा है। चूहेदानी में चूहा, साबुनदानी में साबुन, मगर मच्छरदानी में आदमी सो रहा है।

• बाबाजी ने दिया परम सत्य ज्ञान... जिंदगी की भागदौड़ में सेहत का भी ख्याल रखिए... ऐसा ना हो कि आप पीछे रह जाएं... और पेट आगे निकल जाए!

• भिखारी- बेटा, कुछ दे दे।

संता- दे दूंगा तो मुझे क्या मिलेगा?

भिखारी- बेटा, तुझे स्वर्ग मिलेगा।

संता- तो चलो मैं तुम्हें दिल्ली देता हूं।

भिखारी- अबे, दिल्ली क्या तेरी है, जो मुझे दे रहा है।

संता- तो स्वर्ग तेरे बाप का है क्या, जो प्लाट काट रहा है! ❐

मासूम का सवाल

आज मैं अपनी भतीजी को बगीचे में घुमाने ले गई, जो छल साल की है, जो बाल्यकाल की मासूमियत में मुझसे एक सवाल कर गई कि क्यों इस बाग में इतने प्यारे फूल और इतने सारे पेड़ हैं? किन्तु हमारे घर के आस पास नहीं है इतने पेड़। सिर्फ इतने सारे उचे-उचे मकान क्यों हैं। उसके इस मासूम से सवाल ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि हम बड़े लोग ये भूल गये कि हमारा भी इस प्रकृति के प्रति कुछ दायित्व बनता है। इस मायानगरी में भूल ही गये हैं कि कितना प्रमुख है हम सब के लिए इस प्रकृति को बचाना। हम सबको दायित्व लेना ही होगा अपने पर्यावरण को बचाने के लिए। तो आइए हम सब मिलकर कम-से-कम 5 से 10 गमले अपने छत पर लगायें,,, चाहे वो पौधे किसी भी प्रकार के हों। ❐

सावन की महिमा

■ विनीता अग्निहोत्री

रिमझिम रिमझिम बरसता पानी, चारों तरफ हरियाली, पेड़ों पर पक्षियों की चहचहाहट, मंदिरों में शिव-पूजा, जगह-जगह शिव-पुराण, सड़कों पर कांवड़ियों का उत्साह, हर-हर महादेव से गूंजता बातावरण, राखियों से सजी दुकानें, यत्र-तत्र परे झूले ये सब पहचान हैं मनमोहक महीने सावन की।

हिंदू पंचांग के 12 महीनों का अलग-अलग महत्व है। परन्तु सावन माह का तो अपने में दोगुना महत्व है। कवियों और साहित्यकारों ने अनेक कवितायें और लेख लिखे हैं- सावन से संबंधित।

वैज्ञानिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से सावन का महत्व है। चूंकि पुराणों के अनुसार ये माह शिव-भगवान को अतिप्रिय है इसलिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। सावन माह शिव को प्रिय होने के पीछे पुराणों में कई मान्यताएं, कथायें है। सबसे प्रचलित कथा है कि पार्वती जी ने शिवजी को पति रूप में पाने के लिए इसी माह में कठोर तप किया था और शिवजी को पति रूप में प्राप्त किया तभी से शिवजी के श्रावण-मास अति प्रिय हो गया। दूसरी प्रचलित कथा यह भी है कि समुद्र-मंथन श्रावण माह में ही किया गया था, और जो हलाहल विष निकला था, उसे अपने कंठ में समाहित करके भगवान शिव ने सृष्टि की रक्षा की थी, परन्तु विषपान से शिवजी का कंठ नीलवर्ण का हो गया था। विष का प्रभाव कम करने के लिए सभी देवी-देवताओं ने शिव को जल अर्पित किया था। इसीलिए भगवान शिव को जल चढ़ाने का महत्व है और श्रावण माह में तो हजार गुना ज्यादा महत्व है। इस माह में रूद्राभिषेक का भी बहुत महत्व है।

इसी माह में हरियाली तीज नागपंचमी और रक्षावंधन त्योहार भी आते हैं। तीज और रक्षाबंधन नारी जाति से संबंधित त्योहार हैं इसीलिए नारियों के सजने संवरने का त्योहार भी कहा जाता है। इसे पावस-ऋतु भी कहते हैं, क्योंकि इस माह में वर्षा अत्यधिक होती है। आदिकाल से ही मान्यता है कि श्रावण-माह के सोमवार व्रत रखने से लड़कियों को मनचाहे सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है इसलिए अधिकतर लड़कियां 10-10 वर्ष की आयु से ही सावन के सोमवार व्रत बड़े उत्साह, उमंग से रखती है और भगवान शिव की विविध बस्तुओं से पूजा, अर्चना करती हैं।

इसी माह से चातुर्मास प्रारंभ हो जाता है। जिसमें साधु संत, साधक एक ही स्थान पर ठहर कर साधना करते हैं।

वैज्ञानिक महत्व भी है श्रावण मास का। इस माह में कोई भी धार्मिक उत्सव, विवाह शादी, मुंडन, गृह-प्रवेश, नये बाहन की खरीददारी बर्जित बतायी गई है, उसके पीछे छिपा हुआ कारण ये ही है कि बरसात के कारण अनेक जीव-जंतु, कीड़े-मकोड़े आदि निकल आते हैं, यातायात मुश्किल होता है। पुराने समय में तो असंभव ही होता था, और भी कई समस्याओं के कारण शुभ कार्यों पर रोक लगा दी ऋषि-मुनियों ने, ताकि एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना ना पड़े।

अंत में यही लिखना चाहूंगी कि हमारी संस्कृति में श्रावण-माह का अन्य माहों की अपेक्षा अधिक महत्व है और हम सभी का ये कर्तव्य है कि अपनी संस्कृति को जीवित रखें और बहुत उत्साह, उमंग, खुशियों के साथ सावन माह का आनंद लें - हम महिलाओं का इसमें विशेष योगदान रहता है। ❐

मनन योग्य संदेश

एक युवा युगल के पड़ोस में एक वरिष्ठ नागरिक युगल रहते थे, जिनमें पति की आयु लगभग अस्सी वर्ष थी, और पत्नी की आयु उनसे लगभग पांच वर्ष कम थी। युवा युगल उन वरिष्ठ युगल से बहुत अधिक लगाव रखते थे, और उन्हें दादा दादी की तरह सम्मान देते थे। इसलिए हर रविवार को वो उनके घर उनके स्वास्थ्य आदि की जानकारी लेने और कॉफी पीने जाते थे। युवा युगल ने देखा कि हर बार दादी जी जब कॉफ़ी बनाने रसोईघर में जाती थी तो कॉफ़ी की शीशी के ढक्कन को दादा जी से खुलवाती थी। इस बात का संज्ञान लेकर युवा पुरुष ने एक ढक्कन खोलने के यंत्र को लाकर दादी जी को उपहार स्वरूप दिया ताकि उन्हें कॉफी की शीशी के ढक्कन को खोलने की सुविधा हो सके। उस युवा पुरुष ने ये उपहार देते वक्त इस बात की सावधानी बरती की दादा जी को इस उपहार का पता न चले! उस यंत्र के प्रयोग की विधि भी दादी जी को अच्छी तरह समझा दी। उसके अगले रविवार जब वो युवा युगल उन वरिष्ठ नागरिक के घर गया तो वो ये देख के आश्चर्य में रह गया कि दादी जी उस दिन भी कॉफी की शीशी के ढक्कन को खुलवाने के लिए दादा जी के पास लायी! युवा युगल ये सोचने लगे कि शायद दादी जी उस यंत्र का प्रयोग करना भूल गयी या वो यंत्र काम नही कर रहा। जब उन्हें एकांत में अवसर मिला तो उन्होंने दादी जी से उस यंत्र के प्रयोग न करने का कारण पूछा। दादी जी के उत्तर ने उन्हें निशब्द कर दिया। दादी जी ने कहा– "ओह! कॉफी की शीशी के ढक्कन को मैं स्वयं भी अपने हाथ से, बिना उस यंत्र के प्रयोग के आसानी से खोल सकती हूँ, पर मैं कॉफी की शीशी का ढक्कन उनसे इसलिए खुलवाती हूँ कि उन्हें ये अहसास रहे कि आज भी वो मुझसे ज्यादा मजबूत हैं। और मैं उन्हीं पर आश्रित हूँ, इसीलिए वे हमारे घर के पुरुष हैं। इस बात से मुझे भी ये लाभ मिलता है कि मैं ये महसूस करती हूँ कि मैं आज भी उन पर निर्भर हूँ, और वो मेरे लिए आज भी बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। यही बात हम दोनों के स्नेह के बंधन को शक्ति प्रदान करती है।'' ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

उत्तम नगर जिले में केंद्र का उद्घाटन

गत 27 जून को सेवा भारती, पश्चिमी विभाग के उत्तम नगर जिला में सतरंगी समाज के समन्वय से नए केंद्र का उद्घाटन किया गया। केंद्र का उद्घाटन सेवा भारती दिल्ली प्रांत के संगठन मंत्री श्रीमान शुकदेव जी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस शुभ अवसर पर सुंदरकांड के पाठ का आयोजन भी उत्तम जिला द्वारा कराया गया। इस अवसर पर प्रांत से श्रीमती अनामिका जी, विभाग से श्रीमान राजीव बत्रा जी, जिले से श्रीमान हरजीत लाल भाटिया जी, श्रीमान तारक नाथ जी, श्रीमान के पी सिंह जी, श्रीमती रामेश्वरी जी, श्रीमती अलका जी, श्रीमती आरती जी, संघ से श्रीमान संजीव कुमार जी (जिला कार्यवाह) श्रीमती रंजना जी, सतरंगी समाज से प्रिया जी व उनकी टीम की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद व जलपान की व्यवस्था रही।

प्रताप नगर में योग दिवस मना

भीष्म सेवा केन्द्र प्रताप नगर सेवा भारती बाल संस्कार के बाल-बालिकाओं को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम में दुर्गा वाहिनी की अमायरा जादौन ने योग कराया तथा भगत सिंह विद्यार्थी प्रताप शाखा के गण शिक्षक ने आसन कराए। कार्यक्रम में विभाग मंत्री यमुना विहार ने भाग लिया।

वृक्षारोपण एवं चित्रकला प्रतियोगिता

कड़कड़डूमा केन्द्र में वृक्षारोपण एवं चित्रकला प्रतियोगिता हुई। इस अवसर पर जिले की पालक श्रीमती रीना सचदेवा कार्यकर्ता विनीता गुप्ता जी व शिक्षिकाएं रेखा जी, नौरोती जी, प्रीति जी व निरीक्षिका ज्योति जी भी उपस्थित रहीं। पर्यावरण संरक्षण के विषय में बताया गया। साथ ही पौधे भी लगाए गए। चित्रकला प्रतियोगिता भी हुई। प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिया गया।

समर कैंप

सेवा भारती पूर्वी विभाग, गांधी नगर जिला द्वारा समर कैंम्प में बच्चों को इंग्लिश स्पीकिग क्लास के साथ ही कई तरह खेल एवं योगा क्लास द्वारा बच्चों को प्रशिक्षित किया गया।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 जुलाई, 2023, प्रकाशन तिथि-5 जुलाई, 2023
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

सेवा भारती दिल्ली प्रांत योजना अनुसार यमुना विहार विभाग स्थित सिग्नेचर ब्रिज, हिन्दू शरणार्थी बस्ती में विधिवत पूजा अर्चना और प्रसाद वितरण के उपरान्त सिलाई प्रशिक्षण केंद्र प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र जी, सिलाई अध्यापिका नीतू बहिन जी, स्थानीय शाखा के कार्यकर्ता, बस्ती जन और 13 शिक्षार्थी बहनें उपस्थित रहे।

पूर्णमासी पर हवन

सेवा भारती- बलजीत नगर केन्द्र, पटेल नगर जिला, झण्डेवाला विभाग में पूर्णमासी के अवसर पर हवन रखा गया। इसमें कांता जी एवं सिलाई की बहनें व शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। हवन-यज्ञ सामाजिक समरसता एवं आपसी मेल-मिलाप के लिए आयेजित किया गया।

वाद्य प्रशिक्षण केंद्र का एक वर्ष

सेवा भारती वाद्य प्रशिक्षण प्रकल्प जो झंडेवाला माता मंदिर के सहयोग से चलता है। इस प्रकल्प ने अपना एक वर्ष पूरा किया। उसी के उपलक्ष में वार्षिक उत्सव मनाया गया। बहुत अच्छा लगा। बहनों के गायन में अद्भुत परिवर्तन हुआ है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय ने बढ़ाई जागरूकता

पूर्वी विभाग में सभी चारों जिले के केन्द्र पर दिनांकश: 31 मई 2023 को शाहदरा, 1 जून -गाँधी नगर, 2 जून को इन्द्रप्रस्थ, 3 जून- मयूर विहार में राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय से बस आयी और सभी को ढेर सारी जानकारी जागरूकता के विषय में जैसे वैक्सीन, कोरोना महामारी, स्वच्छता आदि-आदि के विषय में जानकारी दी।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।